वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 386

ISBN-978-93-82071-70-9

श्री अनन्तनाथ विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

अयोध्या (उ.प्र.) में आषाढ़ कृ. 13 से आषाढ़ शु. द्वितीया, 5 जुलाई से 10 जुलाई 2013, तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280994

Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
1100 प्रतियाँ	आषाढ़ शु. द्वितीया, 10 जुलाई 2013	24/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

श्रावक के षट्आवश्यक कर्तव्यों में आचार्यश्री कुन्दकुन्ददेव ने दान एवं पूजा को मुख्य कहा है। दान अथवा पूजा के द्वारा ही भक्त भगवान की भक्ति कर सकता है जिसका फल क्रम से स्वर्ग व मोक्ष की प्राप्ति है।

आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव जैसे आध्यात्मिक संतों तथा स्वामी समन्तभद्र जैसे तार्किक आचार्यों ने भी भगवान की भक्ति में तन्मय होकर अनेक स्तुतिपरक ग्रंथों की रचना की है, जिससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वर्तमान पंचमकाल में शुद्धोपयोग के अभाव में शुभोपयोग की स्थापना हेतु भगवान की भक्ति साधु एवं श्रावक दोनों के लिए परम आवश्यक है। पूर्वाचार्यों द्वारा ग्रंथ लेखन की परम्परा को बीसवीं शताब्दी में पुनर्जीवित करके साहित्य सृजन के क्षेत्र में भक्ति संचार द्वारा ऐतिहासिक क्रान्ति लाने वाली राष्ट्रगौरव परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी सर्वदा यही कहती हैं कि इस कलिकाल में अपनी आत्मा की विशुद्धि हेतु अन्तरंग ध्यान साधना से अधिक उपयोगी पूजन विधान के माध्यम से भगवान की भक्ति करना है क्योंकि कालदोष के कारण ध्यान साधना में कोई भी जीव उत्कृष्ट अवस्था को प्राप्त करने में असमर्थ होता है। जीव के जन्म-जन्मांतरों का पुण्य संचित होकर एक साथ उदय में आने पर ही शुभोपयोग में समय व्यतीत होता है।

किसी श्रावक द्वारा दिया गया दान और साधु द्वारा मिली प्रेरणा के साथ पूजा-विधान आदि के माध्यम से जिनेन्द्र भगवान की भक्ति न जाने कितने प्राणियों के सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में निमित्त बन जाती है और भव्य जीवों का कल्याण कर देती है, उसी शृँखला में दान के प्रतिफलरूप शाश्वत तीर्थ अयोध्या में भगवान अनन्तनाथ की टोंक का जीर्णोद्धार होकर भव्य जिनमंदिर निर्मापित हुआ है और पूज्य माताजी की प्रेरणा के साथ-साथ उनके द्वारा रचित इस नूतन रचना "श्री अनन्तनाथ विधान" के माध्यम से भक्तगण अपने सम्यग्दर्शन को दृढ़ करते हुए महान पुण्य का संचय करेंगे।

बंधुओं! साक्षात् सरस्वती स्वरूपा पूज्य माताजी की कलम से अब तक तीन सौ ग्रंथों का सृजन हो चुका है, जिसमें पचास से अधिक वृहत् विधान एवं अनेकों लघु विधानों की रचना माताजी ने की है, जिसे समय-समय पर वीर ज्ञानोदय ग्रंथमला से प्रकाशित कर हम अत्यन्त गौरव का अनुभव करते हैं क्योंकि पूज्य माताजी की लेखनी से सदैव आगमोक्त कृति की ही रचना होती है, एक भी शब्द अथवा पंक्ति आगम से हटकर नहीं होती है। यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि भगवान अनन्तनाथ के जिनमंदिर की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा (जुलाई-सन् 2013) के अवसर पर ही इस विधान का प्रकाशन हो रहा है। यह नूतन विधान प्रत्येक करने-कराने वालों के मनोरथों की सिद्धि में सहकारी बने, यही इस कृति के प्रकाशन की सार्थकता है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में अवस्थित इस शस्यश्यामला भारतभूमि में दो ही शाश्वत तीर्थ माने गये हैं– 1. अयोध्या, 2. सम्मेदशिखर। जिसमें शाश्वत जन्मभूमि होने का गौरव अयोध्या नगरी को प्राप्त है और शाश्वत निर्वाणभूमि होने का गौरव सम्मेदशिखर जी सिद्धक्षेत्र को प्राप्त है। अयोध्या तीर्थ अनंतानंत तीर्थंकरों के जन्म से पावन है और सम्मेदशिखर से प्रत्येक तीर्थंकर मोक्षधाम को प्राप्त करते हैं किन्तु वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी कालदोषवश मात्र पाँच तीर्थंकर "श्री ऋषभदेव, अजितनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ और अनंतनाथ" ही अयोध्या नगरी में जन्मे और शेष उन्नीस तीर्थंकर अलग-अलग स्थानों पर जन्मे, इस प्रकार चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियाँ कहलाईं।

अयोध्या में जन्मे पाँच तीर्थंकरों में भगवान अनन्तनाथ का जन्म महाराजा सिंहसेन की महारानी जयश्यामा देवी से ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी तिथि में हुआ और चैत्र कृष्णा अमावस्या के दिन उन्होंने सम्मेदशिखर जी सिद्धक्षेत्र से निर्वाणधाम को प्राप्त किया। जिस अयोध्या नगरी में कभी वैभवयुक्त भगवान अनन्तनाथ का दिव्य महल था, वर्तमान में कालदोषवश अवशेष रूप में वहाँ सरयू नदी के तट पर भगवान अनन्तनाथ की टोंक है, जिसमें भगवान के चरणचिन्ह विराजमान हैं। हुण्डावसर्पिणी के ही प्रभाववश यह तीर्थ शाश्वत तीर्थ होते हुए भी जनमानस के स्मृतिपटल से धूमिल सा हो रहा था, जिसके जीर्णोद्धार की महती आवश्यकता थी किन्तु किसी की दृष्टि उस ओर नहीं जा रही थी। सन् 1993 में जैन समाज का सौभाग्य जगा और जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, कुमारिकाओं के लिए त्याग का मार्ग प्रशस्त करने वाली, सरस्वती स्वरूपा, 300 ग्रंथों की रचनाकर्त्री, परमपूज्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की निष्कलंक परम्परा की महान साध्वी, जिनशासन गौरव परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के पावन चरण उस तीर्थ पर पड़े और देखते ही देखते वह तीर्थ विश्व के क्षितिज पर देदीप्यमान सूर्य की भांति चमक उठा। पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1993 से अनवरत वहाँ का जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है जिसमें तीन चौबीसी मंदिर एवं समवसरण मंदिर के साथ वहाँ अवस्थित छह टोकों पर भव्य जिनमंदिर का निर्माण होकर भव्य, नयनाभिराम और जगत्पूज्य जिनप्रतिमाएँ विराजमान हो रही हैं जो युगों-युगों तक जिनशासन की कीर्ति को विस्तारित करती रहेंगी। उस क्रम में अभी सन् 2013 में भगवान अनन्तनाथ का अतीव सुन्दर जिनमंदिर उसी सरयू तट के किनारे अवस्थित टोंक पर

निर्मित होकर भगवान अनन्तनाथ की सवा दश फुट उत्तुंग पद्मासन जिनप्रतिमा विराजमान हो रही हैं, उन्हीं अनन्तनाथ भगवान की भक्ति में पूज्य माताजी ने यह नूतन कृति "श्री अनन्तनाथ विधान" की रचना की है जिसमें मंगलाचरणपूर्वक भगवान अनन्तनाथ की पूजा, पंचकल्याणक अर्घ्य एवं भगवान के 108 गुणों के 108 अर्घ्य हैं, विधान के अंत में सारभूत जयमाला एवं एक बड़ी जयमाला है जिसको पढ़ने से भगवान के समवसरण का परिज्ञान होता है। इसके साथ ही इसमें अयोध्या तीर्थ क्षेत्रपूजा एवं तीन चौबीसी पूजा भी है, जिसके माध्यम से भक्तगण उनका शास्त्रोक्त परिचय प्राप्त कर सकते हैं। सदैव जिनधर्म, जिनागम एवं जिनसंस्कृति की रक्षा तथा उसके संरक्षण-संवर्धन में तत्पर परम पूज्यनीय माताजी की लेखनी से 78 वर्ष की वय में भी निरन्तर आगमोक्त और जनोपयोगी कृतियाँ जिनशासन को प्राप्त हो रही हैं जिस हेतु जिनशासन उनका चिरऋणी रहेगा। वस्तुतः ऐसे महान सन्तों से ही यह जिनसंस्कृति अपनी गरिमा को अक्षुण्ण बनाए हुए है। पूज्य माताजी द्वारा रचित अन्य कृतियों की भांति ही यह कृति भी भक्तों को भक्ति के माध्यम से देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में दृढ़ करते हुए कर्मनिर्जरा में निमित्तभूत बने और पूज्य माताजी स्वस्थ एवं चिरायु रहकर हम अज्ञानी प्राणियों को ज्ञानामृत से अभिसिंचित करते हुए अपना वात्सल्यमयी वरदहस्त हम पर बनाए रखें, यही जिनेन्द्र भगवान से मंगल प्रार्थना है।

शाश्वत तीर्थ अयोध्या का परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

अनन्तानंत तीर्थंकरों की शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या तीर्थ उत्तरप्रदेश के फैजाबाद जिले में स्थित है। कभी यह तीर्थ उत्तरप्रदेश के कौशल जनपद में माना जाता था। संभवतः काल के आधार पर जनपद के नाम में परिवर्तन आ गया है। यूँ तो इस तीर्थ में प्रत्येक अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी में चौबीस तीर्थंकर जन्म लेते हैं किन्तु वर्तमान हुण्डावसर्पिणी कालदोषवश पाँच तीर्थंकर ही इस धरा पर जन्में, शेष उन्नीस तीर्थंकर अलग-अलग स्थानों पर जन्में। आज से 9 लाख वर्ष पूर्व मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र ने यहाँ जन्म लेकर अपने आदर्शों के द्वारा इसे राममय बना दिया। वर्तमान में हिन्दू अनुयायियों के भी वहाँ लगभग 8000 छोटे-बड़े मंदिर हैं।

वर्तमान के जैन मंदिरों में कटरा मुहल्ले में एक प्राचीन जैन मंदिर है जहाँ सन् 1952 में पूज्य आचार्यश्री देशभूषण महाराज की प्रेरणा से भगवान आदिनाथ, भरत, बाहुबली की खड्गासन प्रतिमाएँ विराजमान हुईं, यहाँ 4 और वेदियाँ हैं, क्षेत्रपाल और देवी पद्मावती की वेदी है तथा प्रांगण के बीच में तीर्थंकर सुमतिनाथ भगवान की टोंक है। बेगमपुरा मुहल्ले में भगवान अजितनाथ की टोंक है। कटरा स्कूल तथा ऊँची सरकारी टंकी के पास भगवान अभिनंदननाथ की टोंक है, जहाँ प्रायः बन्दर बैठा मिलता है। अभिनंदननाथ टोंक के पास ही अयोध्या में जन्में प्रथम चक्रवर्ती भरत तथा प्रथम कामदेव बाहुबली की टोंक है। सरयू नदी के तट पर राजकीय उद्यान के पीछे बड़े परिसर में भगवान अनन्तनाथ की टोंक है। अयोध्या के रायगंज मोहल्ले में सन् 1965 में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज की प्रेरणा से उनके सान्निध्य में एक 31 फुट उत्तुंग खड्गासन भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा विराजमान होकर विशाल मंदिर का निर्माण हुआ, बड़ी मूर्ति के आजू-बाजू में अन्य 6 तीर्थंकर प्रतिमाएँ तथा ऊपर दोनों ओर एक-एक वेदी हैं।

जिस तीर्थ पर कभी जिनधर्म का शंखनाद होता था, कालदोषवश ही वह शाश्वत तीर्थ जनमानस की दृष्टि से धूमिल और उपेक्षित था जिससे वहाँ

अराजक तत्त्वों का साम्राज्य फैल गया था किन्तु बीसवीं शताब्दी में जैन समाज का सौभाग्य जगा और राष्ट्रगौरव, चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा की महान साध्वी, शारदा स्वरूपा, परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ध्यान में सन् 1992 में धनतेरस के दिन ऋषभदेव प्रतिमा के दर्शन हुए और सन् 1993 में पूज्य माताजी की दृष्टि एवं चरण उस तीर्थ पर पड़ते ही उस तीर्थ की मानो काया ही पलट गई और रामजन्मभूमि के नाम से प्रसिद्ध वह तीर्थ ऋषभ जन्मभूमि के नाम से विश्व के क्षितिज पर छा गया। जून 1993 में पूज्य माताजी ने संघ सहित भगवान ऋषभदेव के प्रथम दर्शन किए और उनकी प्रेरणा से तीर्थ विकास एवं जीर्णोद्धार की शृँखला में सर्वप्रथम रायगंज मंदिर में तीन चौबीसी मंदिर एवं समवसरण मंदिर का निर्माण (1993-1994) हुआ, पुनः शासन देव-देवियों की वेदियाँ निर्मित हुईं और रायगंज मंदिर परिसर में ही आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी की मूर्ति एवं आचार्य श्री शांतिसागर महाराज व आचार्य श्री देशभूषण महाराज के चरण स्थापित (सन् 1995) किए गए। 20 फरवरी 1995 को सरयू तट पर बने राजकीय उद्यान में माताजी की प्रेरणा से 21 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा निर्मित हुई तथा कटरा मंदिर के एक स्थल पर बनी पांडुकशिला में श्री शांति-कुंथु-अरनाथ के चरण विराजमान किए गए। तीर्थ विकास के क्रम में पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से वर्तमान की सशक्त कमेटी ने अयोध्या की सभी टोकों का जीर्णोद्धार करते हुए उसके प्राचीन स्वरूप को लौटाने का प्रशंसनीय कार्य किया है। इस क्रम में भगवान श्री ऋषभदेव की टोंक पर सुन्दर जिनमंदिर का निर्माण होकर भगवान ऋषभदेव की श्वेतवर्णी प्रतिमा विराजमान हो चुकी हैं। भगवान अनन्तनाथ टोंक पर विशाल जिनमंदिर निर्मापित होकर भगवान अनन्तनाथ की सवा दस फुट उत्तुंग ग्रेनाइट की पद्मासन प्रतिमा जैन संस्कृति का दिग्दर्शन करा रही है। भगवान भरत-बाहुबली टोंक का जीर्णोद्धार होकर श्वेतवर्णी एक ही पाषाण में श्री भरत-बाहुबली प्रतिमा विराजमान हो रहीं हैं तथा भगवान अजितनाथ एवं अभिनंदननाथ की टोंक पर शीघ्र ही सुन्दर जिनमंदिर का निर्माण होकर जिनप्रतिमा विराजमान होने वाली है। वास्तव में परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का जैन

समाज पर महान उपकार है, जिनकी कृपाप्रसाद से आज यह तीर्थ अपने प्राचीन स्वरूप में लौट रहा है, इस हेतु पूज्य माताजी का जितना भी गुणानुवाद किया जावे कम है।

अयोध्या में वन्दनीय स्थलों के रूप में इन प्राचीन एवं नवीन जिनमंदिरों का संक्षिप्त दिग्दर्शन मैंने कराया किन्तु वास्तव में तो यहाँ का कण-कण पवित्र है। यात्रियों के ठहरने एवं भोजन हेतु यहाँ ''ज्ञानमती निलय'' ''शांतिसागर निलय'' ''देशभूषण निलय'' के नाम से आधुनिक सुविधायुक्त फ्लैट एवं भोजनशाला रायगंज मंदिर परिसर में है। वहाँ जाकर जैन बंधु तीर्थ परिचय के साथ-साथ अपनी आत्मा को भी तीर्थ बनाने की भावना करें, यही तीर्थयात्रा की सार्थकता है।

आभार

धर्मपरायण नगरी टिकैतनगर के जाने-माने श्रेष्ठी, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी को अवध यात्रा कराकर महान पुण्य का संचय करने वाले, सरल स्वभावी श्रावकरत्न श्री प्रद्युम्न कुमार जी (छोटी शाह) एवं उनके सुपुत्र श्री अमरचंद जैन-हेमचंद-नेमचंद जी ने अपने पुण्य को और अधिक वृद्धिंगत करते हुए अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग कर शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या में भगवान अनन्तनाथ की टोंक का जीर्णोद्धार कराकर वहाँ विशाल जिनमंदिर निर्मापित किया है। इस हेतु उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है। उस विशाल मंदिर की भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के आयोजन के अवसर पर उन्होंने ज्ञानदान स्वरूप भगवान अनंतनाथ की भक्ति कर कर्म शृँखला को काटने में निमित्तभूत पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित श्री अनंतनाथ विधान'' के प्रकाशन में भी अपना सहयोग प्रदान किया है एतदर्थ संस्थान की ओर से उनका आभार व्यक्त करते हुए हम भगवान से यही प्रार्थना करते हैं कि वे सदैव इसी प्रकार अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में करते हुए एक दिनअक्षय सुख प्राप्त करने में सफल होवें।

-सम्पादक

राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

भारत की वसुन्धरा सदैव से तपस्या, त्याग एवं संयम की भूमि रही है। भगवान ऋषभदेव, राम, महावीर की यह भूमि आज भी ऐसे महान व्यक्तित्वों से सुशोभित है कि जो अपने जीवन में ही ऐतिहासिक बन जाते हैं।

ऐसा ही एक महान व्यक्तित्व है–वर्तमान दिगम्बर जैन समाज की सबसे प्राचीन दीक्षित साध्वी-पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी। सन् 1934 में शरदपूर्णिमा के दिन जिला बाराबंकी (उ.प्र.) के टिकैतनगर ग्राम में माता मोहिनी एवं पिता श्री छोटेलाल जैन के दाम्पत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में कन्यारत्न 'मैना' का जन्म हुआ। छोटी सी आयु से ही अपनी माँ की प्रेरणावश जैन ग्रंथों के स्वाध्याय द्वारा इस बालिका ने अपने वैराग्य को भलीभाँति दृढ़ कर लिया और 18 वर्ष की अल्प आयु में शरदपूर्णिमा के दिन ही परिवार के प्रबल विरोध के बावजूद भी आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत एवं गृहत्याग के कठिन नियम धारण कर लिये। सन् 1953 में श्री महावीर जी (राज.) अतिशय क्षेत्र पर आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से आपने क्षुल्लिका दीक्षा लेकर 'वीरमती' नाम प्राप्त किया। पुनः 1956 में बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज की आज्ञानुसार उनके प्रथम पट्टाधीश शिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा (राज.) में आपने आर्यिका दीक्षा लेकर 'ज्ञानमती' नाम प्राप्त किया। ज्ञान प्राप्ति हेतु अध्ययन-अध्यापन एवं स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष अभिरुचि देखकर ही गुरुवर ने आपको यह नाम प्रदान किया था। दीक्षा के प्रारंभिक वर्षों में आपने सर्वप्रथम संस्कृत व्याकरण एवं जैन आगम का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया तथा साथ ही सहस्रनाम मंत्रों की रचनापूर्वक अपनी लेखनी का शुभारंभ भी कर दिया।

60 वर्षों से साधनारत इन महान साध्वी ने अब तक 250 से भी अधिक ग्रंथों का सृजन किया है। संस्कृत, हिन्दी, प्राकृत, कन्नड़ इत्यादि भाषाओं की प्रकाण्ड विदुषी पूज्य माताजी की काव्य प्रतिभा भी अद्वितीय है। जिनेन्द्र भक्ति के रस से भरे हुए न जाने कितने ही पूजन-विधानों की रचना पूज्य माताजी ने अपनी लेखनी द्वारा की है। सन् 1995 में डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय (फैजाबाद) ने पूज्य माताजी की विराट ज्ञान साधना को देखकर जैन इतिहास में प्रथम बार किसी साध्वी को 'डी.लिट्.' की मानद् उपाधि प्रदान की। पुनः इसके उपरांत 8 अप्रैल 2012 को पूज्य माताजी के 57वें आर्यिका दीक्षा दिवस के अवसर पर तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में विश्वविद्यालय का प्रथम विशेष दीक्षांत समारोह आयोजित करके विश्वविद्यालय द्वारा पूज्य माताजी के करकमलों डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान की गई।

कर्मठता, दृढ़संकल्प, अनुशासन के साथ-साथ वात्सल्य की प्रतिबिम्ब पूज्य माताजी की प्रेरणा से कौरवों-पाण्डवों की राजधानी हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.) में जैन भूगोल की अद्वितीय रचना-'जम्बूद्वीप' का निर्माण हुआ है।

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ' का भव्य निर्माण भी पूज्य माताजी की सृजनशक्ति का ही सुन्दर प्रतिफल है। इसी प्रकार भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में नंद्यावर्त महल तीर्थ का भव्य निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में मात्र 22 माह के अल्प अन्तराल में हुआ है।

2600 वर्ष पूर्व कुण्डलपुर (नालंदा) की जो धरती अहिंसा के अवतार भगवान महावीर के जन्मकल्याणक से महान उत्साह एवं हर्ष को प्राप्त हुई थी वह काल के थपेड़ों से भले ही विस्मृत जैसी हो गयी हो, परन्तु जैन समाज के श्रद्धालुओं का वहाँ जाना हमेशा से जारी रहा और अब पूज्य ज्ञानमती माताजी के महान उपकार स्वरूप यह जन्मभूमि पुनः इस प्रकार जगमगा उठी है कि आने वाला भविष्य सदैव इसकी चमक से प्रभावित रहेगा।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982) एवं भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ (1998) का देशव्यापी प्रवर्तन सम्पन्न हुआ एवं कुण्डलपुर से प्रवर्तित भगवान महावीर ज्योति रथ (2003) का प्रवर्तन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। इन रथों के द्वारा सम्पूर्ण भारत में अहिंसामयी सिद्धान्तों की व्यापक प्रभावना हुई।

शैक्षणिक क्षेत्र में अनेकानेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ-सेमिनार इत्यादि पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा समय-समय पर सम्पन्न हुए हैं तथा आज भी हो रहे हैं। पूज्य माताजी के विराट व्यक्तित्व का अभिनंदन करने के लिए समाज ने उन्हें समय-समय पर युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, न्याय प्रभाकर, आर्यिकारत्न, गणिनीप्रमुख, युगनायिका, राष्ट्रगौरव, विश्वविभूति, वाग्देवी, भारतभूषण जैसी उपाधियों से सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया है। वर्तमान में महाराष्ट्र प्रान्त के मांगीतुंगी पर्वत पर विश्व की सबसे ऊँची 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा से हो रहा है।

24 घंटे में एक बार आहार लेकर, केशलोंच एवं पदविहार जैसी कठिन साधना

करते हुए ब्रह्मचर्य एवं चारित्र के तेज को सर्वत्र बिखेरने वाली पूज्य ज्ञानमती माताजी भारतीय संस्कृति की महान धरोहर हैं, जिन्होंने 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों को पूर्ण किया तथा 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से आयोजित विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों से हुआ और सन् 2009 ''शांतिवर्ष'' के रूप में घोषित हुआ। राष्ट्रपति जी ने जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

वास्तव में आज के कलिकाल में भी आध्यात्मिक ज्ञान, चारित्र, साधना एवं मोक्षपथ को साकार करने वाले गुरुओं का जितना अभिनंदन किया जाये, उतना कम है। जो बिना कुछ कहे अपनी मुद्रा द्वारा ही शांति, संयम, सदाचार का उपदेश देते हैं ऐसे साधु इस भारत वसुन्धरा की शान हैं और जो भी प्राणीगण परमसौभाग्य से उनके चरणों में आश्रय प्राप्त कर लेते हैं, वे भी अपने जीवन को सार्थक कर लेते हैं।

उस संत शृँखला में ऐसे चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी पूज्य माताजी के श्रीचरणों में भावभीना कोटिशः नमन है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

—जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)

ईसवी सन् 1972 में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित उक्त संस्था के द्वारा जम्बूद्वीप रचना के निर्माण हेतु मेरठ (उ.प्र.) के ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में नशिया मार्ग पर जुलाई 1974 में एक भूमि क्रय की गई, जहाँ सर्वप्रथम 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण सात हाथ (सवा दस फुट) ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने हेतु फरवरी 1975 में एक लघुकाय जिनालय का निर्माण किया गया, जो सन् 1990 में एक अनोखे 'कमल मंदिर' के रूप में निर्मित हुआ है। यहाँ विराजमान कल्पवृक्ष भगवान महावीर से यह अतिशय क्षेत्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होता हुआ नित्य नये निर्माणों के द्वारा संसार में अद्वितीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। इस प्रतिमा के दर्शन करके भक्तगण अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

जम्बूद्वीप निर्माण का प्रथम चरण—जुलाई सन् 1974 में रखी गई नींव के आधार पर जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में सर्वप्रथम आगम वर्णित सुमेरुपर्वत (101 फुट ऊँचा) का निर्माण अप्रैल सन् 1979 में एवं सन् 1985 में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण पूर्ण हुआ। सोलह जिनमंदिरों से समन्वित उस सुमेरुपर्वत के अंदर से निर्मित 136 सीढ़ियों से चढ़कर श्रद्धालु भक्त समस्त भगवन्तों के दर्शन करके जब सबसे ऊपर पाण्डुकशिला के निकट पहुँचते हैं, तो नीचे जम्बूद्वीप रचना के सभी नदी, पर्वत, मंदिर, उपवन आदि दृश्यों के साथ-साथ हस्तिनापुर के आसपास के सुदूरवर्ती ग्रामों का भी प्राकृतिक सौंदर्य देखकर फूले नहीं समाते हैं।

यात्री सुविधा—हस्तिनापुर तीर्थ में जम्बूद्वीप स्थल के पूरे परिसर में संस्थान द्वारा कार्यालय का सक्रिय संचालन किया जाता है। वहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु आधुनिक सुविधायुक्त 200 कमरे, 50 से अधिक डीलक्स फ्लैट एवं अनेकों गेस्ट हाउस (बंगले) बने हुए हैं। इसके साथ ही यहाँ सुन्दर भोजनालय है जहाँ यात्रियों को सुविधापूर्वक शुद्ध भोजन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त 2 किमी. दूर हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन में सरकारी अस्पताल, डाकखाना, बाजार, इंटरकालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाएँ आदि सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

हस्तिनापुर कैसे पहुँचे ?—भारत की राजधानी दिल्ली से 110 किमी. पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जिला-मेरठ से 40 किमी. दूर हस्तिनापुर तीर्थ है। राजधानी दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए अंतर्राज्यी बस अड्डे अथवा आनंद विहार बस अड्डे से उत्तरप्रदेश रोडवेज तथा डी.टी.सी. बसों की निरंतर सेवा उपलब्ध है। मेरठ से भी प्रति आधे घंटे के अंतराल से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पहुँचने हेतु रोडवेज की बसें सुलभता के साथ उपलब्ध रहती हैं। 'जम्बूद्वीप' के नाम से ये बसें चलती हैं जो सीधे जम्बूद्वीप के सामने ही रुकती हैं और जम्बूद्वीप से ही मेरठ, दिल्ली, तिजारा आदि यात्रा हेतु बसें उपलब्ध रहती हैं। दिल्ली और मेरठ के बीच रेल सेवा भी है। देश-विदेश के यात्रीगण हस्तिनापुर पधारकर इस धरती का स्वर्ग मानी जाने वाली 'जम्बूद्वीप रचना' के दर्शन करें और मानसिक शांति का अनुभव करते हुए मनवांछित फल प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

भगवान अनन्तनाथ का संक्षिप्त परिचय

-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

धातकी खंड द्वीप के पूर्व मेरु से उत्तर की ओर अरिष्टपुर नगर में पद्मरथ राजा राज्य करता था। किसी दिन उसने स्वयंप्रभ जिनेन्द्र के समीप जाकर वंदना भक्ति आदि करके धर्मोपदेश सुना और विरक्त हो दीक्षा ले ली। ग्यारह अंगरूपी श्रुतसागर का पारगामी होकर तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध किया। अन्त में सल्लेखना से मरण कर अच्युत स्वर्ग के पुष्पोत्तर विमान में इन्द्रपद प्राप्त किया।

पंचकल्याणक वैभव—

इस जम्बूद्वीप के दक्षिण भारत की अयोध्या नगरी में इक्ष्वाकुवंशी सिंहसेन महाराज राज्य करते थे, उनकी महारानी का नाम जयश्यामा था। कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा के दिन वह अच्युतेन्द्र रानी के गर्भ में अवतीर्ण हुआ। नव माह के बाद ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी के दिन पुत्र उत्पन्न हुआ। इन्द्र ने पुत्र का नाम 'अनन्तनाथ' रखा। भगवान को राज्य करते हुए पन्द्रह लाख वर्ष बीत गये तब एक दिन उल्कापात देखकर भगवान विरक्त हो गये। भगवान देवों द्वारा निर्मित पालकी पर सवार होकर सहेतुक वन में गये तथा ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी के दिन एक हजार राजाओं के साथ दीक्षित हो गये। छद्मस्थावस्था के दो वर्ष बीत जाने पर चैत्र कृष्ण अमावस्या के दिन केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। अन्त में सम्मेदशिखर पर जाकर एक माह का योग निरोध कर छह हजार एक सौ मुनियों के साथ चैत्र कृष्ण अमावस्या के दिन परमपद को प्राप्त कर लिया।

उन पंचकल्याणक के स्वामी 14वें तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ भगवान के चरणों में अनन्तशः नमन।

चौदहवें तीर्थंकर

भगवान अनन्तनाथ जीवन दर्शन-एक दृष्टि में

जन्मभूमि	— **अयोध्या (उ.प्र.)**		
पिता	— महाराज सिंहसेन	**माता—**	महारानी जयश्यामा
वर्ण	— क्षत्रिय	**गोत्र**	— काश्यप
वंश	— इक्ष्वाकु	**देहवर्ण**	— तप्त स्वर्ण सदृश
चिन्ह	— सेही	**आयु**	— तीस लाख वर्ष
अवगाहना	— दो सौ हाथ	**गर्भ**	— कार्तिक कृ.1
जन्म	— ज्येष्ठ कृ.12	**तप**	— ज्येष्ठ कृ. 12
दीक्षावन	— सहेतुक वन	**दीक्षा वृक्ष**	— पीपल वृक्ष
प्रथम आहार	— साकेत पुर के राजा विशाख द्वारा (खीर का)		
केवलज्ञान वन एवं वृक्ष	—सहेतुक वन एवं पीपल वृक्ष		
केवलज्ञान	— चैत्र कृ. अमावस	**मोक्ष**	— चैत्र कृ. अमावस
मोक्षस्थल	— सम्मेद शिखर पर्वत		

समवसरण में चतुर्विध संघ

गणधर	— श्री जय आदि 50	**मुनि**	— छ्यासठ हजार
गणिनी	— आर्यिका सर्वश्री	**आर्यिका**	— एक लाख आठ हजार
श्रावक	— दो लाख	**श्राविका**	— चार लाख
जिनशासन यक्ष	— किन्नर देव	**यक्षी**	— अनंतमती देवी

भगवान अनन्तनाथ वर्तमान वीर नि.सं. 2539 से सात सागर 65,86,539 वर्ष पहले मोक्ष गए हैं।

अर्घ्य—अडिल्ल छंद

जल गंधादिक अर्घ्य लिया भर थाल में।
'ज्ञानमती' निधि हेतु जजूँ त्रयकाल में।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य गणिनीप्रमुख
श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद

जिनसंस्कृति के संरक्षण-संवर्धन में सतत संलग्न, गुरुआज्ञा को सर्वोपरि मानकर जीवन के प्रत्येक क्षण को देव-शास्त्र-गुरु की निश्छल भक्ति में समर्पित करने वाले, युवावर्ग के लिए आदर्श, मृदुभाषी, जम्बूद्वीप के द्वितीय पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी ने अनन्तानन्त तीर्थंकरों की शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या में भगवान ऋषभदेव की टोंक का जीर्णोद्धार करवाने के पश्चात् अथक परिश्रम और सूझ-बूझ के साथ सरयू तट पर अवस्थित श्री अनंतनाथ तीर्थंकर की टोंक पर विशाल जिनमंदिर का निर्माण कराकर महान पुण्यवर्धन का कार्य किया है। उन्होंने भगवान अनंतनाथ की मूर्ति हेतु पाषाण मंगवाकर हस्तिनापुर में कारीगर बुलाकर मूर्ति का निर्माण कराया है। वे सदैव इसी प्रकार तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास में संलग्न रहते हुए अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने में सफल हों, यही उनके यशस्वी जीवन के लिए मेरा बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है।

उनके साथ ही अयोध्या में भगवान अनन्तनाथ जिनमंदिर के निर्माण में अपनी अर्थांजलि प्रदान करने वाले श्री छोटी शाह (प्रद्युम्न कुमार) एवं उनके सुपुत्र अमरचंद, हेमचंद, नेमचंद जैन सहित सम्पूर्ण परिवार प्रशंसा का पात्र है।

सन् 1993 में इस परिवार ने मेरी अयोध्या यात्रा में संघपति का भार वहन कर जिस गुरुभक्ति का परिचय प्रदान किया, वह वास्तव में सराहनीय है। मैंने देखा है कि छोटी शाह के परिवार में हर बच्चे के अन्दर धार्मिक संस्कार हैं। सभी पुत्रवधुएँ, पौत्र-पौत्री, पौत्रवधू, प्रपौत्र आदि भी धार्मिक कार्यों में अग्रसर रहते हैं। उन सबके लिए मेरा वात्सल्यमयी मंगल आशीर्वाद है।

मण्डल का नक्शा

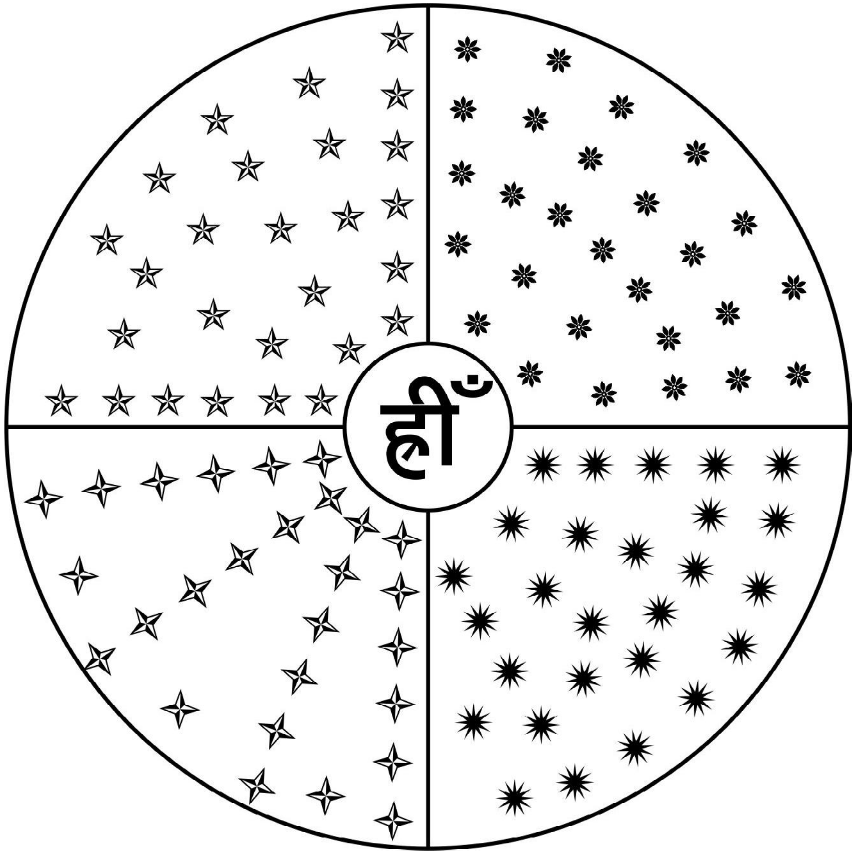

प्रथम कोष्ठक में	**-27 अर्घ्य**
द्वितीय कोष्ठक में	**-27 अर्घ्य**
तृतीय कोष्ठक में	**-27 अर्घ्य**
चतुर्थ कोष्ठक में	**-27 अर्घ्य**

कुल-108 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य एवं 2 जयमाला अर्घ्य

श्री अनन्तनाथ विधान

मंगलाचरण

श्री अनंतजिन स्तोत्र

-उपजाति छंद-

अनंत! दृग्ज्ञानसुवीर्यसौख्यं, अनन्ततां याति तव प्रसादात्।
अनंतदोषान् जिन! मे पुनीहि, नमाम्यनंतं हृदि धारये त्वाम्।।1।।

हे नाथ! अनंत गुणाकर तुम, साकेतपुरी में जन्म लिया।
जयश्यामा माँ सिंहसेन पिता ने, कीर्तिध्वजा को लहराया।।
कार्तिक वदि एकम गर्भ बसे, वदि ज्येष्ठ दुवादशि जन्मे थे।
इस ही तिथि में दीक्षा लेकर, तप तपते वन वन घूमे थे।।2।।

चैत्री मावस में ज्ञानोत्सव, इस ही तिथि में प्रभु सिद्ध हुए।
दो सौ कर देह कनक कांति, प्रभु तीस लाख वत्सर[1] थिति[2] है।।
सेही लांछनयुत अंतकहर! हे देव अनंत! तुम्हें प्रणमूँ।
यह सब व्यवहार स्तुति भगवन्! निश्चय से गुण-गण को हि नमूँ।।3।।

1. वर्ष । 2. आयु।

यद्यपि ये कर्म अनादी से, मेरे संग बँधते आये हैं।
फिर भी अणुमात्र नहीं मुझमें, परिवर्तन करने पाये हैं।।
मैं सब प्रदेश में ज्ञानमयी, जड़कर्मों से क्या नाता है?
मैं हूँ चैतन्य अनंत गुणी, जड़ ही जड़ के निर्माता हैं।।4।।

यह निश्चयनय जब निश्चय से, ध्यानस्थ अवस्था पाता है।
तब कर्मों का कर्त्ता भोक्ता, नहिं होता बंध नशाता है।।
भगवन् ! तव चरण कमल सेवा, करते-करते यह फल पाऊँ।
अनुपम अनंत गुण के सागर, 'कैवल्यज्ञानमति' पा जाऊँ।।5।।

।।अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

भगवान श्री अनंतनाथ जिनपूजा

अथ स्थापना –नरेन्द्र छंद

श्री अनंत जिनराज आपने, भव का अंत किया है।
दर्शन ज्ञान सौख्य वीरजगुण, को आनन्त्य किया है।।
अंतक का भी अंत करें हम, इसीलिए मुनि ध्याते।
आह्वानन कर पूजा करके, प्रभु तुम गुण हम गाते।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक –अडिल्ल छंद

सरयूनदि को नीर कलश भर लाइये।
जिनवर पद पंकज में धार कराइये।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन गंध सुगंधित लाइये।
तीर्थंकर पद पंकज अग्र चढ़ाइये।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अक्षत मुक्ता फल सम लाइये।
जिनवर आगे पुंज चढ़ा सुख पाइये।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वकुल कमल बेला चंपक सुमनादि ले।
मदनजयी जिनपाद पद्म पूजूँ भले।।

भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कलाकंद मोदक घृत मालपुआ लिये।
क्षुधाव्याधि क्षय हेतू आज चढ़ा दिये।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतदीपक की ज्योति जले जगमग करे।
तुम पूजा तत्काल मोह तम क्षय करे।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर सित चंदन आदि मिलाय के।
अग्नि पात्र में खेऊँ भाव बढ़ाय के।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास अंगूर आम आदिक लिये।
महामोक्षफल हेतु तुम्हें अर्पण किये।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अर्घ्य लिया भर थाल में।
'ज्ञानमती' निधि हेतु जजूँ त्रयकाल में।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

श्री अनंत जिनराज के, चरणों धार करंत।
चउसंघ में भी शांति हो, समकित निधि विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब ले, पुष्पांजली करंत।
मिले आत्म सुख संपदा, कटें जगत दुःख फंद।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–सखी छंद–

सिंहसेन अयोध्यापति थे, जयश्यामा गर्भ बसे थे।
कार्तिक वदि एकम तिथि में, प्रभु गर्भकल्याणक प्रणमें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिककृष्णाप्रतिपदायां श्रीअनंतनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि ज्येष्ठ वदी बारस में, सुर मुकुट हिले जिन जन्में।
अठ एक हजार कलश से, जिन न्हवन किया सुर हरषें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां श्रीअनंतनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि ज्येष्ठ वदी बारस थी, उल्का गिरते प्रभु विरती।
तप लिया सहेतुक वन में, पूजत मिल जावे तप मे।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां श्रीअनंतनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि चैत अमावस्या के, पीपल तरु तल जिन तिष्ठे।
केवल रवि उगा प्रभू के, मैं जजूँ त्रिजग भी चमके।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णाअमावस्यायां श्रीअनंतनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत आमावसी यम नाशा, शिवनारि वरी निज भासा।
सम्मेद शिखर को जजते, निर्वाण जजत सुख प्रगटे।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णाअमावस्यायां श्रीअनंतनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा)–

श्री अनंत भगवंत के, चरणकमल सुखकंद।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के, पाऊँ परमानंद।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (108 अर्घ्य)

-दोहा-

सब कर्मों में एक ही, मोह कर्म बलवान।
उसके नाशन हेतु मैं, पूजूँ भक्ति प्रधान।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

-सोरठा-

'महामुनी' प्रभु आप, मुनियों में उत्तम कहे।
नाममंत्र तुम नाथ! पूजत ही सुखसंपदा।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामुनिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि हो मौन धरंत प्रभू 'महामौनी' तुम्हीं।
नाम मंत्र पूजंत, रोग शोक संकट टले।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामौनिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म शुक्लद्वय ध्यान, धार 'महाध्यानी' हुये।
नाममंत्र का ध्यान, करते ही सब सुख मिले।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण जितेंद्रिय आप, नाम 'महादम' धारते।
नाममंत्र तुम नाथ! पूजत आतम निधि मिले।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं महादमगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ क्षमा के ईश, नाम 'महाक्षम' सुर कहें।
नाममंत्र नत शीश, पूजूँ मैं अतिभाव से।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षमगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठरह सहस सुशील, 'महाशील' तुम नाम है।
पूरण हो गुण शील, नाममंत्र मैं पूजहूँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशीलगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप अग्नी में आप, कर्मेंधन को होमिया।
'महायज्ञ' तुम नाथ, पूजूँ भक्ति बढ़ाय के।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायज्ञगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय पूज्य जिनेश! नाम 'महामख' धारते।
पूजूँ भक्ति समेत, नाममंत्र प्रभु सुख मिले।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामखगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच महाव्रत ईश, नाम 'महाव्रतपति' धरा।
जजूँ नमाकर शीश, नाममंत्र प्रभु आपके।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रतपतिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मह्य' आप जगपूज्य, गणधर साधूगण नमें।
मिलें स्वात्मपद पूज्य, नाममंत्र को पूजते।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं मह्यगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकान्तिधर' आप, अतिशय कांतिनिधान हो।
नाममंत्र तुम जाप, करे अतुल सुखसंपदा।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकान्तिधरगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब के स्वामी इष्ट, अतः 'अधिप' सुरगण कहें।
नाशो सर्व अनिष्ट, नाममंत्र तुम पूजहूँ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधिपगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामैत्रिमय' नाथ! सबसे मैत्रीभाव है।
नाममंत्र तुम जाप, त्रिभुवन को वश में करे।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामैत्रिमयगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनवधि गुण के नाथ, तुम्हें 'अमेय' मुनी कहें।
पूजत बनूँ सनाथ, नाममंत्र प्रभु आपके।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमेयगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महोपाय' तुम नाथ! शिव के श्रेष्ठ उपाययुत।
जजत सर्व सुखसाथ, नाममंत्र को नित जपूँ।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं महोपायगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'महोमय' आप, अति उत्सव अरु ज्ञानयुत।
नाममंत्र तुम जाप, सर्व उपद्रव नाशता।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं महोमयगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकारुणिक' आप, दया धर्म उपदेशिया।
नाम मंत्र का जाप्य, करत जन्म मृत्यू टले।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकारुणिकगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंता' आप महान, सब पदार्थ को जानते।
जजूँ नाम गुणखान, पूर्ण ज्ञान संपति मिले।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंतागुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व मंत्र के ईश, 'महामंत्र' तुम नाम है।
तुम्हें नमें गणधीश, नाममंत्र मैं भी जजूँ।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामंत्रगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यतिगण में अतिश्रेष्ठ, नाम 'महायति' आपका।
पूजत ही पद श्रेष्ठ, नाममंत्र को पूजहूँ।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायतिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महानाद' प्रभु आप, दिव्यध्वनी गंभीर धर।
नमत बनूँ निष्पाप, नाममंत्र भी मैं जजूँ।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं महानादगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनी गंभीर, योजन तक सुनते सभी।
जजत मिले भवतीर, 'महाघोष' तुम नाम को।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाघोषगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'महेज्य' सुनाम, महती पूजा पावते।
सौ इन्द्रों से मान्य, नाममंत्र मैं पूजहूँ।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेज्यगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महसांपति' प्रभु आप, सर्व तेज के ईश हो।
तुम प्रताप भवताप, हरण करे मैं पूजहूँ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं महासांपतिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान यज्ञ को धार, नाम 'महाध्वरधर' प्रभू।
मिले सर्व सुखसार, नाममंत्र मैं पूजहूँ।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाध्वरधरगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-स्रग्विणी छंद-

'धुर्य' हो मुक्ति के मार्ग में श्रेष्ठ हो।
कर्म-भू आदि में सर्व में ज्येष्ठ हो।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं धुर्यगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महौदार्य' अतिशायि ऊदार हो।
आप निर्ग्रंथ भी इष्ट दातार हो।।आपके..।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं महौदार्यगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य वाक्याधिपति सु 'महिष्ठवाक्' हो।
दिव्यवाणी सुधावृष्टि कर्ता सु हो।।आपके..।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिष्ठवाक्गुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक आलोक व्यापी 'महात्मा' तुम्हीं।
अंतरात्मा पुनः सिद्ध आत्मा तुम्हीं।।आपके..।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं महात्मागुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व तेजोमयी 'महासांधाम' हो।
आत्म के तेज से सर्व जग मान्य हो।।आपके..।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं महासांधामगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व ऋषि में प्रमुख हो 'महर्षी' तुम्हीं।
ऋद्धी सिद्धी धरो आप सुख की मही।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं महर्षिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ भव धार के आप 'महितोदया'।
तीर्थकर नाम से पूज्य धर्मोदया।।आपके..।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं महितोदयागुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो 'महाक्लेशअंकुश' परीषहजयी।
क्लेश के नाश हेतू सुअंकुश सही।।आपके..।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्लेशअंकुशगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शूर' हो कर्मक्षय दक्ष हो लोक में।
नाथ! मेरे हरो कर्म आनन्द हो।।आपके..।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं शूरगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महाभूतपति' गणधराधीश हो।
नाथ! रक्षा करो आप जगदीश हो।।आपके..।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतपतिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही हो 'गुरू' धर्म उपदेश दो।
तीन जग में तुम्हीं श्रेष्ठ हो सौख्य दो।।आपके..।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुरुगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही हो 'महापराक्रम' के धनी।
केवलज्ञान से सर्ववस्तू भणी।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं महापराक्रमगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'अनंत' आपका अंत ना हो कभी।
नाथ! दीजे अनंतों गुणों को अभी।।आपके..।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महाक्रोधरिपु' क्रोध शत्रू हना।
सर्व दोषारि नाशा सुमृत्यू हना।।आपके..।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्रोधरिपुगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप इंद्रिय 'वशी' लोक तुम वश्य में।
आत्मवश मैं बनूँ चित्त को रोक के।।आपके..।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं वशीगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! हो 'महाभवाब्धिसंतारि' भी।
आप संसार सागर तरा तारते।।आपके..।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाभवाब्धिसंतारिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही 'महामोहाद्रिसूदन' कहे।
मोह पर्वत सुभेदा सुज्ञाता बने।।आपके..।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामोहाद्रिसूदनगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही हो 'महागुणाकर' लोक में।
रत्नत्रय की खनी भव्य पूजूँ तुम्हें।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं महागुणाकरगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षान्त' हो सर्व परिषह उपद्रव सहा।
आपकी भक्ति से हो क्षमा गुण महा।।आपके..।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्तगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो 'महायोगिश्वर' गणधरादी पती।
योगियों में धुरंधर जगत के पती।।आपके..।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायोगीश्वरगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'शमी' शांत परिणाम से विश्व में।
पूर्ण शांती मिले पूजहूँ नाथ! मैं।।आपके..।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं शमीगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'महाध्यानपति' शुक्लध्यानीश हो।
शुक्ल परिणाम हों नाथ! वरदान दो।।आपके..।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानपतिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ध्यातमहाधर्म' सब जीव रक्षा करो।
शुभ अहिंसामयी धर्म के हो धुरी।।आपके..।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं ध्यातमहाधर्मगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'महाव्रत' प्रभो! पाँच व्रत श्रेष्ठ धर।
पूर्ण होवें महाव्रत बनूँ मुक्तिवर।।आपके..।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रतगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'महाकर्मअरिहा' महावीर हो।
कर्म अरि को हना आप अरिहंत हो।।आपके..।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकर्मारिहा-गुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-सुन्दरी छंद-

जिन स्वरूप विदित 'आत्मज्ञ' हो।
सब चराचर लोक सुविज्ञ हो।।
जजतहूँ तुम नाम सुमंत्र को।
सकल सौख्य लहूँ हन कर्म को।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मज्ञगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व देवन मधि 'महादेव' हो।
सुर असुर पूजित महादेव हो।।जजतहूँ..।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं महादेवगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महत समरथवान 'महेशिता'।
सकल ऐश्वर धारि जिनेशिता।।जजतहूँ..।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेशितागुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरवक्लेशापह' दुख नाशिये।
सकल ज्ञान सुधामय साजिये।।जजतहूँ..।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्लेशापहगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज हितंकर 'साधु' कहावते।
स्वपर हित साधन बतलावते।।
जजतहूँ तुम नाम सुमंत्र को।
सकल सौख्य लहूँ हन कर्म को।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं साधुगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरबदोषहरा' जिन आप हो।
सकल गुणरत्नाकर नाथ हो।।जजतहूँ..।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदोषहरगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हर' तुम्हीं सब पाप विनाशते।
प्रभु अनंतसुखाकर आप ही।।जजतहूँ..।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं हरगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'असंख्येय' प्रभु आप ही।
गिन नहीं सकते गुण साधु भी।।जजतहूँ..।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं असंख्येयगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रमेयात्मा' जिन आप हो।
अनवधी शक्तीधर नाथ हो।।जजतहूँ..।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमेयात्मागुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'शमात्मा' शांतस्वरूप हो।
सकल कर्मक्षयी शिवभूप हो।।जजतहूँ..।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं शमात्मागुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगट 'प्रशमाकर' शमखानि हो।
जगत शांतिसुधा बरसावते।।जजतहूँ..।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमाकरगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरबयोगीश्वर' मुनि ईश हो।
गणधरादि नमावत शीश को।।
जजतहूँ तुम नाम सुमंत्र को।
सकल सौख्य लहूँ हन कर्म को।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वयोगीश्वरगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुवन में तुम ईश 'अचिन्त्य' हो।
नहिं किसी जन के मन चिन्त्य हो।।जजतहूँ..।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'श्रुतात्मा' सब श्रुत रूप हो।
सकल भाव श्रुतांबुधि चन्द्र हो।।जजतहूँ..।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतात्मागुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल जानत 'विष्टरश्रव' कहे।
धरम अमृतवृष्टि करो सदा।।जजतहूँ..।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं विष्टरश्रवगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वश किया मन 'दान्तात्मा' प्रभो।
सुतप क्लेश सहा जिन आपने।।जजतहूँ..।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं दान्तात्मागुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम्हीं 'दमतीरथईश' हो।
सकल इन्द्रियनिग्रह तीर्थ हो।।जजतहूँ..।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं दमतीरथईशगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल ध्यात सु 'योगात्मा' तुम्हीं।
शुकल योगधरा जिन आपने।।
जजतहूँ तुम नाम सुमंत्र को।
सकल सौख्य लहूँ हन कर्म को।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगात्मागुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सदा तुम 'ज्ञानसुसर्वगा'।
जगत व्याप्त किया निज ज्ञान से।।जजतहूँ..।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानसुसर्वगागुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रधान' तुम्हीं त्रय लोक में।
प्रमुख हो निज आतम ध्यान से।।जजतहूँ..।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रधानगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमहि 'आत्मा' ज्ञान स्वरूप हो।
सकल लोक अलोक सुजानते।।जजतहूँ..।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मागुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रकृति' हो तिहुँलोक हितैषि हो।
प्रकृतिरूप धरम उपदेशि हो।।जजतहूँ..।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रकृतिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परम' हो सबमें उत्कृष्ट हो।
परम लक्ष्मीयुत जिनश्रेष्ठ हो।।जजतहूँ..।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह

जगत 'परमोदय' जिननाथ हो।
परम वैभव से तुम ख्यात हो।।जजतहूँ..।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमोदयगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रक्षीणाबंध' जिनेश हो।
सकल कर्म विहीन तुम्हीं कहे।।
जजतहूँ तुम नाम सुमंत्र को।
सकल सौख्य लहूँ हन कर्म को।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रक्षीणाबंधगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-मोतीदाम छंद-

प्रभो! तुम 'कामारी' जग सिद्ध।
किया तुम काम महाअरि विद्ध।।
जजूँ तुम नाम महा गुणखान।
भजूँ निज धाम अनन्त महान।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामारिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'क्षेमकृता' अभिराम।
जगत् कल्याण किया सुखधाम।।जजूँ तुम.।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकृत्गुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो तुम 'क्षेमसुशासन' सिद्ध।
किया मंगल उपदेश समृद्ध।।जजूँ तुम.।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमसुशासनगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणव' तुमही ओंकार स्वरूप।
सभी मंत्रों मधि शक्तिस्वरूप।।जजूँ तुम.।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणवगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणय' सबका तुम ही में प्रेम।
नहीं तुम बिन होता सुख क्षेम।।जजूँ तुम.।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणयगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं प्रभु 'प्राण' जगत के त्राण।
दिया सब ही को जीवनदान।।
जजूँ तुम नाम महा गुणखान।
भजूँ निज धाम अनन्त महान।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राणगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'प्राणद' बलदातार।
सभी जन रक्षक नाथ उदार।।जजूँ तुम.।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राणदगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'प्रणतेश्वर' भव्यन ईश।
नमें तुमको उनके प्रभु ईश।।जजूँ तुम.।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणतेश्वरगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रमाण' तुम्हीं जग ज्ञान धरंत।
तुम्हें भवि पा होते भगवंत।।जजूँ तुम.।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाणगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'प्रणिधी' निधियों के स्वामि।
अनंत गुणाकर अंतर्यामि।।जजूँ तुम.।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणिधिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं प्रभु 'दक्ष' समर्थ सदैव।
करो मुझ कर्म अरी का छेव।।जजूँ तुम.।।86।।

ॐ ह्रीं अर्हं दक्षगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'दक्षिण' हो सर्व प्रवीण।
सरल अतिशायि महागुणलीन।।जजूँ तुम.।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हं दक्षिणगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'अध्वर्यु' सुयज्ञ करंत।
महा शिवमार्ग दिया भगवंत।।
जजूँ तुम नाम महा गुणखान।
भजूँ निज धाम अनन्त महान।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हं अध्वर्युगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अध्वर' शिवपथ दर्शंत।
सदा ऋजु ही परिणाम धरंत।।जजूँ तुम.।।89।।

ॐ ह्रीं अर्हं अध्वरगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम ही 'आनंद' अनूप।
मुझे सुखदेव सदा सुखरूप।।जजूँ तुम.।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हं आनंदगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा सबको आनंद करंत।
तुम्हीं प्रभु 'नन्दन' नाम धरंत।।जजूँ तुम.।।91।।

ॐ ह्रीं अर्हं नन्दनगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो तुम 'नन्द' समृद्ध निधान।
सदा करते तुम ज्ञान सुदान।।जजूँ तुम.।।92।।

ॐ ह्रीं अर्हं नन्दगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो तुम 'वंद्य' सुरासुर पूज्य।
सभी वंदन करते अनुकूल्य।।जजूँ तुम.।।93।।

ॐ ह्रीं अर्हं वंद्यगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनिंद्य' तुम्हीं सब दोष विहीन।
अनंत गुणों के पुंज प्रवीण।।जजूँ तुम.।।94।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनिंद्यगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अभिनंदन' जग आनंद।
प्रशंसित हो त्रिभुवन में वंद्य।।
जजूँ तुम नाम महा गुणखान।
भजूँ निज धाम अनन्त महान।।95।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभिनंदनगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'कामह' काम हनंत।
विषयविषमूर्च्छित को सुखकंद।।जजूँ तुम.।।96।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामहगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो तुम 'कामद' हो जग इष्ट।
सभी अभिलाष करो तुम सिद्ध।।जजूँ तुम.।।97।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामदगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोहर 'काम्य' सभी जन इष्ट।
तुम्हें नित चाहत साधु गणीश।।जजूँ तुम.।।98।।

ॐ ह्रीं अर्हं काम्यगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोरथ पूरण 'कामसुधेनु'।
करो मुझ वांछित पूर्ण जिनेंद्र।।जजूँ तुम.।।99।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामसुधेनुगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अरिंजय' आप करम अरि जीत।
हरो मुझ कर्म तुम्हीं जगमीत।।जजूँ तुम.।।100।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरिंजयगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पृथ्वी छंद-

'वरप्रद' जिनेशा एक वरदान दे दीजिये।
मिले तुरत सिद्धिधाम बस और ना चाहिये।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।101।।

ॐ ह्रीं अर्हं वरप्रदगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! यम नाश के 'समुन्मूलिकर्मारि' हो।
उखाड़ जड़मूल से करम शत्रु नाशा तुम्हीं।।जजूँ.।।102।।

ॐ ह्रीं अर्हं समुन्मूलिकर्मारिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! तुम 'कर्मकाष्ठाशुशुक्षणी' लोक में।
समस्त अठ कर्म ईंधन जलावते अग्नि हो।।जजूँ.।।103।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मकाष्ठाशुशुक्षणिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्त शिव कार्य में निपुण आप 'कर्मण्य' हो।
प्रभो! निमित आप पाय सब कार्य मेरे बनें।।जजूँ.।।104।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मण्यगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्त कर्मारि के हनन में सुसामर्थ्य है।
अतेव 'कर्मठ' तुम्हीं सकल कार्य में दक्ष हो।।जजूँ.।।105।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मठगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समर्थ प्रभु आप ही सतत 'प्रांशु' सर्वोच्च भी।
समस्त अघ नाश के सकल सौख्य संपद् भरो।।जजूँ.।।106।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रांशुगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! बस आप 'हेयआदेयवीचक्षणः'।
हिताहित विचारशील तुम सा नहीं अन्य है।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।107।।

ॐ ह्रीं अर्हं हेयादेयविचक्षणःगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्त जग जानते प्रभु 'अनंतशक्ती' तुम्हीं।
अनंत गुण पूरिये हृदय में सदा राजिये।।जजूँ.।।108।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतशक्तिगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-शंभु छंद-

प्रभु महामुनी से लेकर इक सौ आठ नाम तुम जग पूजें।
जो भक्ति वंदना नित्य करें वो भव भव के दुख से छूटें।।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ा करके मेरी भव भव की व्याधि हरो।
प्रभु सात परम स्थान देय, जिनगुण संपत्ती पूर्ण करो।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामुनिआदिअनंतशक्तिपर्यन्तशताष्टगुणविभूषिताय श्रीअनंतनाथ-तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय नमः।**

(9 बार या 108 बार सुगंधित पुष्प या पीले चावल से जाप्य करें)

जयमाला

–बसंततिलका छंद –

देवाधिदेव तुम लोक शिखामणी हो।
त्रैलोक्य भव्यजन कंज विभामणी हो।।
सौ इन्द्र आप पद पंकज में नमे हैं।
साधू समूह गुण वर्णन में रमे हैं।।1।।

जो भक्त नित्य तुम पूजन को रचावें।
आनंद कंद गुणवृंद सदैव ध्यावें।।
वे शीघ्र दर्शनविशुद्धि निधान पावें।
पच्चीस दोष मल वर्जित स्वात्म ध्यावें।।2।।

निःशंकितादि गुण आठ मिले उन्हीं को।
जो स्वप्न में भि हैं संस्मरते तुम्हीं को।।
शंका कभी नहिं करें जिनवाक्य में वो।
कांक्षे न ऐहिक सुखादिक को कभी वो।।3।।

ग्लानी मुनी तनु मलीन विषे नहीं है।
नाना चमत्कृति विलोक न मूढ़ता है।।
सम्यक्चरित्र व्रत से डिगते जनों को।
सुस्थिर करें पुनरपी उसमें उन्हीं को।।4।।

अज्ञान आदि वश दोष हुए किसी के।
अच्छी तरह ढक रहें न कहें किसी से।।
वात्सल्य भाव रखते जिनधर्मियों में।
सद्धर्म द्योतित करें रुचि से सभी में।।5।।

वे द्वादशांग श्रुत सम्यग्ज्ञान पावें।
चारित्र पूर्ण धर मनपर्यय उपावें।।
वे भक्त अंत बस केवलज्ञान पावें।
मुक्त्यंगना सह रमें शिवलोक जावें।।6।।

गणधर जयादिक पचास समोसृती में।
छ्यासठ हजार मुनि संयमलीन भी थे।।
थी सर्वश्री प्रमुख संयतिका वहाँ पे।
जो एक लाख अरु आठ हजार प्रमिते।।7।।

दो लाख श्रावक चतुर्लख श्राविकाएँ।
संख्यात तिर्यक् सुरादि असंख्य गायें।।

उत्तुंग देह पच्चास धनू बताया।
है तीस लाख वर्षायु मुनीश गाया।।8।।

''सेही'' सुचिन्ह तनु स्वर्णिम कांति धारें।
वंदूँ अनंत जिन को बहु भक्ति धारें।।
पूजूँ नमूँ सतत ध्यान धरूँ तुम्हारा।
संपूर्ण दुःख हरिये भगवन्! हमारा।।9।।

हे नाथ! कीर्ति सुन के तुम पास आया।
पूरो मनोरथ सभी जो साथ लाया।।
सम्यक्त्व क्षायिक करो सुचरित्र पूरो।
कैवल्य 'ज्ञानमति' दे, यम पाश चूरो।।10।।

–दोहा–

तुम पद आश्रय जो लिया, सो पहुँचे शिवधाम।
इसीलिए तुम चरण में, करूँ अनंत प्रणाम।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो श्री अनंत तीर्थंकर का पूजन विधान रुचि से करते।
वे सांसारिक अनंत दुख से, छुट जाते सर्व सौख्य लभते।।
निज 'ज्ञानमती' कैवल्य करें, आनन्त्य चतुष्टय को पाते।
निज के अनंतगुण पूर्ण करें, फिर सिद्धशिला को पा जाते।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

बड़ी जयमाला

–सोरठा–

श्री अनंत जिनराज, अनंतगुण के प्रभु धनी।
नमूँ नमाकर माथ, गाऊँ गुणमणिमालिका।।1।।

–नरेन्द्र छंद–

जय जय तीर्थंकर क्षेमंकर, गणधर मुनिगण वंदे।
जय जय समवसरण परमेश्वर, वंदत मन आनंदे।।
प्रभु तुम समवसरण अतिशायी, धनपति रचना करते।
बीस हजार सीढ़ियों ऊपर, शिला नीलमणि धरते।।2।।

धूलिसाल परकोटा सुंदर, पंचवर्ण रत्नों के।
मानस्तंभ चार दिश सुंदर, अतिशय ऊँचे चमकें।।
उनके चारों दिशी बावड़ी, जल अति स्वच्छ भरा है।
आसपास के कुंड नीर में, पग धोती जनता है।।3।।

प्रथम चैत्यप्रासाद भूमि में, जिनगृह अतिशय ऊँचे।
खाई लताभूमि उपवन में, पुष्प खिलें अति नीके।।
वनभूमी के चारों दिश में, चैत्यवृक्ष में प्रतिमा।
कल्पभूमि सिद्धार्थ वृक्ष को, नमूँ नमूँ अति महिमा।।4।।

ध्वजा भूमि की उच्च ध्वजाएँ, लहर लहर लहरायें।
भवनभूमि के जिनबिम्बों को, हम नित शीश झुकायें।।
श्रीमंडप में बारह कोठे, मुनिगण सुरनर बैठे।
पशुगण भी उपदेश श्रवण कर, शांतचित्त वहाँ बैठे।।5।।

गंधकुटी के मध्य सिंहासन, जिनवर अधर विराजें।
प्रातिहार्य की शोभा अनुपम, कोटि सूर्य शशि लाजें।।
सौ इन्द्रों से पूजित जिनवर, त्रिभुवन के गुरु माने।
नमूँ नमूँ मैं हाथ जोड़कर, मेरे भवदुःख हानें।।6।।

चिन्मय ज्योति चिदंबर चेतन, चिच्चैतन्य सुधाकर।
जय जय चिन्मूरति चिंतामणि, चिंतितप्रद रत्नाकर।।
आप अलौकिक कल्पवृक्ष प्रभु, मुंहमांगा फल देते।
आप भक्त चक्री सुरपति, तीर्थंकर पद पा लेते।।7।।

जो तुम चरण सरोरुह पूजें, जग में पूजा पावें।
जो जन तुमको चित में ध्याते, सब जन उनको ध्यावें।।
जो तुम वचन सुधारस पीते, सब उनके वच पालें।
जो तुम आज्ञा पालें भविजन, उन आज्ञा नहिं टालें।।8।।
जो तुम सन्मुख भक्ति भाव से, नृत्य करें हर्षित हो।
तांडव नृत्य करें उन आगे, सुरपति भी प्रमुदित हो।।
जो तुम गुण को नित्य उचरते, भवि उनके गुण गाते।
जो तुम सुयश सदा विस्तारें, वे जग में यश पाते।।9।।
मन से भक्ति करें जो भविजन, वे मन निर्मल करते।
वचनों से स्तुति को पढ़कर, वचन सिद्धि को वरते।।
काया से अंजलि प्रणमन कर, तन का रोग नशाते।
त्रिकरण शुचि से वंदन करके, कर्म कलंक नशाते।।10।।
बहुविध तुम यश आगम वर्णे, श्रवण किया मैं जब से।
तुम चरणों में प्रीति लगी है, शरण लिया मैं तब से।।
नाथ अनंत! कृपा ऐसी अब, मुझ पर तुरतहिं कीजे।
''सम्यग्ज्ञानमती'' लक्ष्मी को, देकर निज सम कीजे।।11।।

—दोहा—

श्री अनंत तीर्थेश जिन! पंचकल्याणक ईश।
नमूँ नमूँ तुमको सदा, श्रद्धा से नत शीश।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—शंभु छंद—

जो श्री अनंत तीर्थंकर का पूजन विधान रुचि से करते।
वे सांसारिक अनंत दुख से, छुट जाते सर्व सौख्य लभते।।
निज 'ज्ञानमती' कैवल्य करें, आनन्त्य चतुष्टय को पाते।
निज के अनंतगुण पूर्ण करें, फिर सिद्धशिला को पा जाते।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

—दोहा—

ऋषभदेव से वीर तक, तीर्थंकर भगवान।
श्री अनंत तीर्थेश को, नमूँ नमूँ धर ध्यान।।1।।
मूलसंघ में कुंदकुंद-अन्वय सरस्वति गच्छ।
बलात्कारगण में हुए, सूरि नमूँ मन स्वच्छ।।2।।
सदी बीसवीं के प्रथम गुरु महान आचार्य।
चरित चक्रवर्ती श्री-शांतिसागराचार्य।।3।।
इनके पहले शिष्य श्री-वीरसागराचार्य।
प्रथमहि पट्टाचार्य गुरु, नमूँ भक्ति उर धार्य।।4।।
वीर अब्द पच्चीस सौ, उनतालिस जग ख्यात।
सित षष्ठी वैशाख की, मंगलमयी प्रभात।।5।।
श्री अनंत जिनराज का यह विधान सुखकार।
गणिनी ज्ञानमती किया पूर्ण भक्ति उर धार।।6।।
जब तक नहिं हो 'ज्ञानमति' केवल एक महान्।
नहिं अनंत गुण पूर्ण हो, तब तक हो प्रभु ध्यान।।7।।
श्री अनंत जिन टोंक पर, निर्मापित जिनसद्म।
श्री अनंत प्रभु मूर्ति है, सवा दश फुट तुंग।।8।।
प्रथम अयोध्या तीर्थ पर, होगा पंचकल्याण।
इसी हेतु मैंने रचा, अतिशयकारि विधान।।9।।
जिनमंदिर जिनमूर्ति के, निर्माता जन भव्य।
प्रेरक कारक सर्व जन, नित सुख पावें नव्य।।10।।
जब तक शाश्वत तीर्थ यह, तब तक रहे विधान।
तीर्थंकर भगवंत का, भव्य करें गुणगान।।11।।

।।इति प्रशस्ति समाप्ता।।

श्री अयोध्या तीर्थक्षेत्र पूजा

-अथ स्थापना-

(तर्ज-गोमटेश, जय गोमटेश......)

आदिनाथ, जय आदिनाथ, मम हृदय विराजो-2
हम यही भावना करते हैं।
भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।
हो नगर नगर में प्रभु पूजा, सारी धरती भक्तिस्थल हो।।हम0।।1।।
युग की आदी में इन्द्रराज ने, नगरि अयोध्या रचवाई।
श्री नाभिराय मरुदेवि को पाकर, सारी जनता हरषाई।।
प्रभु आदिनाथ का जन्म याद कर, मेरा मन भी उज्ज्वल हो।।हम0।।2।।
श्री अजितनाथ अभिनंदन सुमती, जिन अनंत ने जन्म लिया।
इन्द्रों ने जिन शिशु को लेकर, मेरू गिरि पर अभिषेक किया।।
जिन जन्मभूमि का अर्चन कर, मेरा मन भी अति उज्ज्वल हो।।हम0।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अष्टक-

तर्ज-आवो बच्चों तुम्हें दिखायें.....

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।
सरयूनदि का जल अति शीतल, पद्मपराग सुवास मिला।
रागभाव मल धोवन कारण, धार करें मनकंज खिला।।

जलधारा से पूजा करते, पावें उज्ज्वल कीर्ति को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।1।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथ-तीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।
केशर घिस कर्पूर मिलाया, भ्रमर पंक्तियां आन पड़ें।
तीर्थक्षेत्र पूजन से नशते, कर्मशत्रु भी बड़े बड़े।।
चंदन से पूजा करते ही, पावें अविचल कीर्ति को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।2।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथ-तीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।
चंद्र चन्द्रिका सम सित तंदुल, पुंज चढ़ायें भक्ती से।
अमृतकणसम निज समकित गुण, पायें अतिशय युक्ती से।।
अक्षत से जिनक्षेत्र पूजते, पावें अक्षय कीर्ति को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।3।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

वर्ण वर्ण के सुमन सुगंधित, पारिजात वकुलादि खिले।
कामव्यथा नश जाय क्षेत्र को, अर्पण कर नवलब्धि[1] मिले।।
पुष्पों से पूजा करते ही, पावें निजगुण कीर्ति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।4।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

रसगुल्ला रसपूर्ण अंदरसा, कलाकंद पयसार[2] लिये।
अमृतपिंड सदृश नेवज से, तीर्थक्षेत्र को यजन किये।।
चरु से पूजा करते ही जन, हरते क्षुध की भीति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।5।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथ-तीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

हेमपात्र में घृत भर बत्ती, ज्योति जले तम नाश करे।
दीपक से आरति करते ही, हृदय पटल की भ्रांति हरे।।

१. क्षायिकज्ञान आदि नव क्षायिकलब्धियाँ। २. मलाई।

करें आरती भक्ति भाव से, पावें आतमज्योति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।6।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

धूपघड़े में धूप जलाकर, अष्टकर्म को दग्ध करें।
निज आतम के भावकर्म मल, द्रव्यकर्म भी भस्म करें।।
धूप खेयकर पूजा करते, पावें सुरभित कीर्ति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।7।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतम तीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

फल अंगूर अनंनासादिक, सरस मधुर ले थाल भरे।
आत्म अतीन्द्रिय सुख इच्छुक हो, फल अर्पें बहु भक्ति भरे।।
फल से पूजा करते ही हम, पावें निजपद तीर्थ को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।8।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-4।।

जल चंदन अक्षत माला चरु, दीप धूप फल अर्घ्य लिया।
केवल 'ज्ञानमती' पद हेतू, जिनपद पंकज अर्घ्य किया।।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, पावें शिवपद तीर्थ को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजते, पावें आतमतीर्थ को।।9।।
वंदे जिनवरं-4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-सोरठा-

सरयूनदि का नीर, कंचन झारी में भरा।
मिले भवोदधि तीर, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा

वकुल कमल कल्हार, पुष्पांजलि करते यहाँ।
मिले सौख्य भंडार, यश सौरभ चहुंदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।)

प्रत्येक अर्घ्य-(शंभु छंद)

आषाढ़ वदी दुतिया को जहाँ, कृतयुग का प्रथम महोत्सव था।
प्रभु ऋषभदेव के गर्भकल्याणक, का वह पहला उत्सव था।।
उस तीर्थ अयोध्याजी के प्रति, मेरा यह अर्घ्य समर्पण है।
हो गर्भवास दुख नाश मेरा, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवगर्भकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चैत्र कृष्ण नवमी तिथि को, जहाँ ऋषभदेव का जन्म हुआ।
माता मरुदेवी का आंगन, एवं त्रिलोक भी धन्य हुआ।।
पितु नाभिराय ने जहाँ किमिच्छक, दान सभी को बाँटा था।
उस नगरि अयोध्या को वन्दूँ, जहाँ लगा देव का तांता था।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवजन्मकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ चैत्र वदी नवमी को, नीलांजना नृत्य प्रभु ने देखा।
उसकी मृत्यू लख जीवन की, क्षणभंगुरता का क्षण देखा।।
वैरागी वृषभेश्वर ने जहाँ, जाकर दीक्षा धारण की थी।
वह तीर्थ प्रयाग प्रसिद्ध हुआ, मैं पूजूँ मुझे मिले सिद्धी।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवदीक्षाकल्याणकपवित्रप्रयागतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि ग्यारस तिथि को, केवलज्ञान प्रभू ने प्राप्त किया।
तब पुरिमतालपुर में धनपति ने, समवसरण निर्माण किया।।
नृप वृषभसेन ने दीक्षा लेकर, गणधर का पद प्राप्त किया।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमन करूँ, वृषभेश्वर ने जहाँ ज्ञान लिया।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रपुरिमतालपुर[1] तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ का गर्भागम, कल्याणक हुआ अयोध्या में।
वदि ज्येष्ठ अमावस धनपति ने, बरसाये रत्न अयोध्या में।।
उस नगरी का अर्चन करने को, अर्घ्य सजाकर लाया हूँ।
तीर्थंकर की शाश्वत नगरी को, वन्दन करने आया हूँ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअजितनाथगर्भकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ अजितनाथ का जन्मकल्याण, मनाने इन्द्र सभी आये।
शुभ माघ शुक्ल दशमी तिथि को, त्रैलोक्य के प्राणी हरषाये।।
उस पावन भूमि अयोध्या का, अर्चन सबको सुखकारी है।
तीर्थंकर श्री अजितेश्वर के, चरणों में धोक हमारी है।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअजितनाथजन्मकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उस नगरी का सुन्दर वैभव भी, नहीं लुभा पाया प्रभु को।
शुभ माघ शुक्ल नवमी के दिन, वैराग्य हुआ अजितेश्वर को।।

---

१. प्रयाग तीर्थ।

साकेतपुरी के बाग सहेतुक, में जाकर दीक्षा धारी।
उस त्यागभूमि को अर्घ्य चढ़ा, चरणों में जाऊँ बलिहारी।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअजितनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साकेतपुरी में अजितनाथ का, केवलज्ञान कल्याणक है।
तिथि पौष शुक्ल ग्यारस का दिन, परमातमपद का ज्ञायक है।।
उस तीर्थ अयोध्या की रज में, पावनता सदा महकती है।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमूँ ज्ञान की, वर्षा जहाँ बरसती है।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअजितनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख शुक्ल षष्ठी तिथि में, सिद्धार्था माँ के आँगन में।
साकेतपुरी में रत्न बरसते, पिता स्वयंवर के घर में।।
चौथे तीर्थंकर अभिनंदन, प्रभु का गर्भागम उत्सव था।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमूँ अयोध्या, तीरथ सचमुच शाश्वत था।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअभिनंदननाथगर्भकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन जिन का जन्म हुआ, तब इन्द्र सिंहासन डोल उठा।
तिथि माघ शुक्ल द्वादशि के दिन, तीनों लोकों में शोर मचा।।
रत्नों की वर्षा हुई पिता ने, दान किमिच्छक बांट दिया।
उस पुण्यभूमि को अर्घ्य चढ़ा, मैंने भी आनंद प्राप्त किया।।10।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअभिनंदननाथजन्मकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस जगह प्रभू ने मेघों का, इक सुंदर नगर बसा देखा।
वैराग्य प्राप्त हो गया तुरत, जब वही नगर विनशा देखा।।
जग की नश्वरता लख वन में, जाकर दीक्षित हो गये प्रभो।
उस नगरि अयोध्या को पूजूं, हे अभिनन्दन जगवंद्य प्रभो।।11।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअभिनंदननाथदीक्षाकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयकार अयोध्या में गूंजी, जब पौष शुक्ल चौदश आई।
अभिनंदन प्रभु के तीर्थंकर, शुभ कर्म की प्रकृति उदय आई।।
धनपति ने समवसरण रचना, कर दी तुरंत गगनांगण में।
उस पावन भू को अर्घ्य चढ़ा, चाहूँ तीरथ का दर्शन मैं।।12।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअभिनंदननाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला दुतिया तिथि में, जहाँ सुमतिनाथ जी गर्भ बसे।
जिस जगह मेघरथ राजा की, रानी को सोलह स्वप्न दिखे।।
पितु मात की पूजा करने को, तब इन्द्र सपरिकर थे आये।
उस गर्भकल्याणक भूमी की, पूजन कर हम सब हरषाये।।13।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुमतिनाथगर्भकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलावती माता ने जहाँ, प्रभु सुमतिनाथ को जन्म दिया।
तिथि चैत्र शुक्ल एकादशि ने, साकेतपुरी को धन्य किया।।
पर्वत सुमेरु पर ले जाकर, सौधर्म इन्द्र ने न्हवन किया।
उस जन्मभूमि को अर्घ्य चढ़ा, हम सबने पावन जनम किया।।14।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुमतिनाथजन्मकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी नवमी को जहाँ, प्रभु सुमति को जातिस्मरण हुआ।
दीक्षा का भाव प्रगटते ही, लौकान्तिक सुर आगमन हुआ।।
उद्यान सहेतुक में जाकर, वस्त्राभरणों का त्याग किया।
उस त्यागभूमि को अर्घ्य चढ़ा, हमने सुख का साम्राज्य लिया।।15।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुमतिनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साकेतपुरी का वह उपवन, फिर से इक बार प्रफुल्लित था।
जहाँ चैत्र सुदी ग्यारस के दिन, कैवल्य दिवाकर प्रगटित था।।

उस ज्ञानकल्याणक के प्रतीक में, समवसरण निर्माण हुआ।
जो अर्घ्य चढ़ाकर नमन करें, उनका सचमुच कल्याण हुआ।।16।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुमतिनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदि एकम तिथी जहाँ, माँ श्यामा ने देखे सपने।
जिनवर अनंत का गर्भकल्याण, मनाने आये देव घने।।
नृप सिंहसेन साकेतपती ने, सपनों का फल बतलाया।
उस तीर्थ अयोध्या की पूजन को, थाल सजा कर मैं लाया।।17।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअनंतनाथगर्भकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुण्डावसर्पिणी काल अयोध्या, नगरी का इतिहास बना।
यहाँ पाँच प्रभू के जन्म में अन्तिम, प्रभु अनंत का धाम बना।।
शुभ ज्येष्ठ वदी बारस तिथि को, सुर मुकुट स्वयं ही नम्र हुए।
उस पुण्य धरा को अर्घ्य चढ़ा, तीरथ वन्दन के भाव हुए।।18।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअनंतनाथजन्मकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक बार देख उल्का गिरते, जिनवर अनंत ने दीक्षा ली।
निज जन्मतिथी में ही प्रभु ने, परिकर व प्रजा को शिक्षा दी।।
क्षणभंगुर इस मानव तन से, अविनश्वर पद को पाना है।
इसलिए त्यागमय धरती को, श्रद्धा से अर्घ्य चढ़ाना है।।19।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअनंतनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फिर उसी अयोध्या में अनंत, तीर्थंकर प्रभु को ज्ञान मिला।
उग्रोग्र तपस्या के द्वारा, जहाँ समवसरण का धाम मिला।।
वह चैत्र अमावस्या का दिन, सबने दिव्यध्वनि पान किया।
आठों द्रव्यों का अर्घ्य चढ़ा, मैंने निज में विश्राम किया।।20।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअनंतनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-

जो नगरि अयोध्या तीर्थंकर की, शाश्वत जन्मभूमि मानी।
इस युग के पाँच जिनेश्वर के ही, जन्म से वह पावन मानी।।
सबके कल्याणक से पवित्र, साकेतपुरी का अर्चन है।
पूर्णार्घ्य समर्पण करके तीर्थ, व तीर्थंकर को वंदन है।।21।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथादिपंचतीर्थंकरकल्याणकपवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

*जाप्य मंत्र-***ॐ ह्रीं अयोध्याजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीऋषभदेवाजिताभिनंदनसुमतिनाथानंतजिनेन्द्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

-शंभु छन्द-

हे नाथ! आपके गुणमणि की, जयमाल गूंथ कर लाये हैं।
भक्ती से प्रभु के चरणों में, गुणमाल चढ़ाने आये हैं।।

है धन्य अयोध्यापुरी जहाँ, श्री आदिनाथ ने जन्म लिया।
जिन अजितनाथ अभिनंदन सुमती, प्रभु अनंत ने धन्यकिया।।
कैलाशगिरी से वृषभदेव जिन, मोक्षधाम को पाये हैं।।हे0।।1।।

सम्राट् भरतचक्री ने दीक्षा ले, शिवपद को प्राप्त किया।
इक्ष्वाकुवंशि[1] नृप चौदह लाख हि, लगातार शिवधाम लिया।।
ये पुरी विनीता के जन्में, परमात्मधाम को पाये हैं।।हे0।।2।।

बाहूबलि कामदेव ने जीत, भरत को फिर दीक्षा धर के।
प्रभु एक वर्ष थे ध्यान लीन, तन बेल चढ़ीं अहि भी लिपटे।।
फिर केवलज्ञानी बनें नाथ, हम गुण गाके हर्षाये हैं।।हे0।।3।।

---

१. अयोध्या में भरत को आदि लेकर चौदह लाख इच्छ्वाकुवंशीय राजा बिना व्यवधान के लगातार मोक्ष गये हैं। हरिवंशपुराण सर्ग १३, श्लोक १३।

श्री अजितनाथ आदिक चारों, तीर्थंकर सम्मेदाचल से।
शिवधाम गये इन्द्रादिवंद्य, हम नित वंदें मन वच तन से।।
धनि धन्य अयोध्या जन्मस्थल, शिवथल वंदत हर्षाये हैं।।हे0।।4।।

चक्रीश सगर आदिक यहाँ के, कर्मारि नाश शिव लिया अहो।
श्री रामचन्द्र ने इसी अयोध्या, को पावन कर दिया अहो।।
मांगीतुंगी से मोक्ष गये, इन वंदत पुण्य बढ़ाये हैं।।हे0।।5।।

युग की आदी में आदिनाथ, पुत्री ब्राह्मी सुंदरी हुईं।
पितु से ब्राह्मी औ अंकलिपी, पाकर विद्या में धुरी हुईं।।
पितु से दीक्षा ले गणिनी थीं, इनके गुण सुर नर गाये हैं।।हे0।।6।।

इनके पथ पर अगणित नारी, ने चलकर स्त्रीलिंग छेदा।
आर्यिका सुलोचना ने ग्यारह, अंगों को पढ़ जग संबोधा।।
दशरथ माँ पृथिवीमती आर्यिका, को हम शीश नमाये हैं।।हे0।।7।।

सीता ने अग्निपरीक्षा में, सरवर जल कमल खिलाया था।
पृथ्वीमति गणिनी से दीक्षित, आर्यिका बनीं यश पाया था।।
श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण लवकुश, सब दुःखी हृदय गुण गाये हैं।।हे0।।8।।

सीता ने बासठ वर्षों तक, बहु उग्र उग्र तप तप करके।
तेतिस दिन सल्लेखना ग्रहण, करके सुसमाधि मरण करके।।
अच्युत दिव में होकर प्रतीन्द्र, रावण को बोध कराये हैं।।हे0।।9।।

जय जय रत्नों की खान, रत्नगर्भा रत्नों की प्रसवित्री।
जय जय साकेतापुरी अयोध्यापुरी विनीता सुखदात्री।।
जय जयतु अनादिनिधन नगरी, हम वंदन कर हर्षाये हैं।।हे0।।10।।

बस काल दोष से इस युग में, यहाँ पांच तीर्थंकर जन्म लिये।
सब भूत भविष्यत् कालों में, चौबिस जिन जन्मभूमि हैं ये।।
हम इसका शत शत वंदन कर, अतिशायी पुण्य कमाये हैं।।हे0।।11।।

जय जय तीर्थंकर भरत सगर, जय रामचन्द्र लव कुश गुणमणि।
जय जयतु आर्यिका ब्राह्मी माँ, सुंदरी व सीता साध्वीमणि।।
हम केवल 'ज्ञानमती' हेतू, तुम चरणों शीश झुकाये हैं।।हे 0।।12।।

जय जयतु अयोध्या जिस निकटे, है टिकैतनगर जहाँ जन्म लिया।
जय जयतु आर्यिका रत्नमती, जिनने निज जीवन धन्य किया।।
ब्राह्मी माँ की पदधूलि बनूं, यह भाव हृदय लहराये हैं।
हे नाथ! आपके गुणमणि की, जयमाल गूंथ कर लाये हैं।।13।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथ-तीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

-दोहा-

वीर संवत् पचीस सौ, उन्निस मगसिर शुद्ध।
ग्यारस तिथि पूजा रची, जिन यजते हो सिद्धि।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

तीन चौबीसी पूजा

-स्थापना-गीता छंद-

मंगलमयी सब लोक में, उत्तम शरणदाता तुम्हीं।
वर तीन चौबीसी जिनेश्वर, तीर्थकर्ता मान्य ही।।
इस भरत में ये भूत संप्रति, भावि तीर्थंकर कहे।
आह्वान करके जो जजें, वे स्वात्मसुख संपति लहें।।1।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अथाष्टक-स्रग्विणी छंद-

नीर सरयू नदी का भरा लायके।
धार देऊँ प्रभो पाद में आयके।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।1।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध सौगंध्य कर्पूर केशर मिली।
पाद चर्चंत सम्यक्त्व कलिका खिली।।तीन चौबीसी.।।2।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दुग्ध के फेन सम स्वच्छ अक्षत लिये।
पुंज को धारने स्वात्म संपत लिये।।तीन चौबीसी.।।3।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

केवड़ा मोगरा पुष्प अरविंद हैं।
नाथ पद पूजते कामशर भंग हैं।।तीन चौबीसी.।।4।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मुद्ग लाडू इमरती कनक थाल में।
पूजते भूख व्याधी हरूँ हाल में।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।5।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण के पात्र में ज्योति कर्पूर की।
नाथ की आरती मोह को चूरती।।तीन चौबीसी.।।6।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशगंध ले अग्नि में खेवते।
कर्म की भस्म हो नाथ पद सेवते।।तीन चौबीसी.।।7।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अंगूर केला अनंनास ले।
नाथ पद अर्चते मुक्तिकांता मिले।।तीन चौबीसी.।।8।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि वसु द्रव्य ले थाल में।
अर्घ्य अर्पण करूँ नाथ के भाल मैं।।तीन चौबीसी.।।9।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-सोरठा-

तीर्थंकर परमेश, त्रिभुवन शांतीकर सदा।
त्रिकरण शुद्धी हेत, शांतीधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

-नरेन्द्र छंद-

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, आर्यखण्ड है सुन्दर।
उत्सर्पिणि में भूतकाल में, हुए यहाँ तीर्थंकर।।

उन निर्वाणनाथ आदिक जिन, चौबीसों को पूजूँ।
नगरि अयोध्या जन्मभूमि को, जजते भव से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणनाथ-सागरनाथ-महासाधु-विमलप्रभ-श्रीधरनाथ-सुदत्तनाथ-अमलप्रभ-उद्धरनाथ-अंगिरनाथ-सन्मतिनाथ-सिंधुनाथ-कुसुमाँजलिनाथ-शिवगणनाथ-उत्साहनाथ-ज्ञानेश्वर-परमेश्वर-विमलेश्वर-यशोधरनाथ-कृष्णनाथ-ज्ञानमतिनाथ-शुद्धमतिनाथ-भद्रनाथ-अतिक्रान्तनाथ-शांतनाथ नाम-भूतकालीन-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभ अजित अभिनंदन सुमती, जिन अनंत तीर्थंकर।
पाँच अयोध्या में जन्में ये, शेष जन्म अन्यत्र।।
हुंडा अवसर्पिणी काल यह, वर्तमान का मानो।
आर्यखंड में चौबिस जिनवर, इन्हें जजत दुख हानो।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभदेवअजितनाथ-संभवनाथ-अभिनंदननाथ-सुमतिनाथ-पद्मप्रभ-सुपार्श्वनाथ-चन्द्रप्रभ-पुष्पदंतनाथ-शीतलनाथ-श्रेयांसनाथ-वासुपूज्यनाथ-विमलनाथ-अनंतनाथ-धर्मनाथ-शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ-मल्लिनाथ-मुनिसुव्रतनाथ-नमिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीरस्वामि नाम-वर्तमानकालीन-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आने वाली उत्सर्पिणि में, चौबिस जिनवर होंगे।
महापद्म आदिक तीर्थंकर, स्वयं सिद्धपद लेंगे।।
नगरि अयोध्या में जन्मेंगे, उन सबके गुण गाऊँ।
अष्ट द्रव्य ले अर्घ्य चढ़ाकर, सब दुख शोक नशाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महापद्मनाथ-सुरदेवनाथ-सुपार्श्वनाथ-स्वयंप्रभनाथ-सर्वात्मभूतनाथ-देवपुत्रनाथ-कुलपुत्रनाथ-उदंकनाथ-प्रोष्ठिलनाथ-जयकीर्तिनाथ-मुनिसुव्रतनाथ-अमरनाथ-निष्पापनाथ-निष्कषायनाथ-विपुलनाथ-निर्मलनाथ-चित्रगुप्तनाथ-समाधिगुप्तनाथ-स्वयंभूनाथ-अनिवर्तकनाथ-जयनाथ-विमलनाथ-देवपालनाथ-अनंतवीर्यनाथ-नाम-भविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य-**ॐ ह्रीं त्रैकालिकद्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

(9 बार या 108 बार पुष्प या पीले चावल से जाप्य करें)

जयमाला

-दोहा-

तीर्थंकर के जन्म से, नगरि अयोध्या वंद्य।
गाऊँ गुणमाला अबे, पाऊँ सौख्य अनिंद्य।।1।।

-शेर छंद-

जैवंत मुक्तिकान्त देव देव हमारे।
जैवंत भक्तवृन्द भवोदधि से उबारे।।
जैवंत तीन काल के तीर्थेश बहत्तर।
जैवंत तीन चौबिस के सर्व तीर्थकर।।2।।
जय भूतकाल के अनंतानंत तीर्थकर।
जय जय भविष्य के अनंतानंत तीर्थकर।।
इन भूत भावि जिन की जन्मभूमि अयोध्या।
शाश्वत त्रिलोक वंद्य महातीर्थ अयोध्या।।3।।
जय पंचकल्याणक पति जिनराज को नमूँ।
जय दो या तीन कल्याणक धारें उन्हें नमूँ।।
हे नाथ! आप जन्म के छह माह ही पहले।
धनराज रत्नवृष्टि करें मात के पहले।।4।।
जब आप मात गर्भ में अवतार धारते।
तब इन्द्र सपरिवार आय भक्ति भाव से।।
प्रभु गर्भकल्याणक महाउत्सव विधी करें।
माता पिता की भक्ति से पूजन विधी करें।।5।।
हे नाथ! आप जन्मते सुरलोक हिल उठे।
इन्द्रासनों के कंप से आश्चर्य हो उठे।।
भेरी करा सब देव का आह्वान करे हैं।
जन्माभिषेक करने का उत्साह भरे हैं।।6।।
सुरराज आ जिनराज को सुरशैल ले जाते।
सुरगण असंख्य मिलके महोत्सव को मनाते।।

जब आप हो विरक्त देव सर्व आवते।
दीक्षा विधी उत्सव महामुद से मनावते।।7।।
जब घातिया को घात ज्ञानसंपदा भरें।
तब इन्द्र आ अद्भुत समवसरण विभव करें।।
जब आप मृत्यु जीत मुक्तिधाम में बसें।
सिद्ध्यंगना के साथ परमानंद सुख चखें।।8।।
सब इन्द्र आ निर्वाण महोत्सव मनावते।
प्रभु पंचकल्याणकपती को शीश नावते।।
मैं आप शरण पाय के सचमुच कृतार्थ हूँ।
बस 'ज्ञानमती' पूर्ण होने तक ही दास हूँ।।9।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

-दोहा-

पंचमगति के हेतु मैं, नमन करूँ पंचांग।
परमानंद अमृत अतुल, मिले सौख्य सर्वांग।।10।।

।।इत्याशीर्वादः।।

तीर्थंकर जन्मभूमि वंदना

(मंगलचतुर्विंशतिका)

—गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

-अनुष्टुप् छंद-

अयोध्या मंगलं कुर्या-दनन्ततीर्थकर्तृणाम्।
शाश्वती जन्मभूमिर्या, प्रसिद्धा साधुभिर्नुता।।1।।

ऋषभोऽजिततीर्थेशोऽप्यभिनंदनतीर्थकृत्।
श्रीमान् सुमतिनाथश्चा - नन्तनाथजिनेश्वरः।।2।।

पंचतीर्थकृतां गर्भ - जन्मकल्याणकादिषु।
इन्द्रादिभिः सदा वंद्या, वंद्यते वंदयिष्यते।।3।।

संप्रति कालदोषेण शेषास्तीर्थंकराः पृथक्।
संजातास्ता अपिजन्म-भूमयो मंगलं भुवि।।4।।

श्रावस्ती मंगलं कुर्यात्, संभवनाथजन्मभूः।
तनुतान्मे मनःशुद्धिं, भव्यानां भवहारिणी।।5।।

कौशाम्बी मंगलं कुर्यात्, पद्मप्रभस्य जन्मभूः।
जिनसूर्यो मनोऽब्जं मे, प्रफुल्लीकुरुतादपि।।6।।

वाराणसी जगन्मान्या, मंगलं तनुतान्मम।
जन्मभूमिः सुरैः पूज्या, सुपार्श्वपार्श्वनाथयोः।।7।।

चन्द्रपुरी सुरैर्मान्या, मंगलं कुरुतात्सदा।
चन्द्रप्रभजिनेंद्रस्य, जन्मभूर्जन्मपावनी।।8।।

काकंदी मंगलं कुर्यात्, पुष्पदन्तस्य जन्मभूः।
आनंदं तनुताद् भूमौ, सर्वमंगलकारिणी।।9।।

मंगलं कुरुतान्नित्यं, जन्मभूर्भद्रकावती।
शीतलस्य जिनेंद्रस्य, मनो मे शीतलं क्रियात्।।10।।

सिंहपुरी जगन्मान्या, मंगलं कुरुतान्मम।
श्रीश्रेयांसजिनेंद्रस्य, जन्मभूमिः शिवंकरा।।11।।

चंपापुरी जगद्वंद्या, मंगलं तनुताद् ध्रुवं।
वासुपूज्यजिनेंद्रस्य, जन्मभूमिर्नुतामरैः।।12।।

सा कंपिलापुरी नित्यं, मंगलं कुरुतान्मम।
मच्चित्तं विमलीकुर्यात्, विमलेश्वरजन्मभूः।।13।।

रत्नपुरी यतीन्द्राणां, मंगलं कुरुताच्च नः।
सद्धर्मवृद्धये भूयाद्, धर्मनाथस्य जन्मभूः।।14।।

हस्तिनागपुरी नित्यं, मंगलं तनुतान्मम।
शांतिकुंथ्वरतीर्थेशां, जन्मभूमिर्जगन्नुता।।15।।

या मिथिलापुरी शश्वत्, मंगलं कुरुतान्मम।
जन्मभूमिः प्रसिद्धाभूत्, मल्लिनाथनमीशयोः।।16।।

मंगलं संततं कुर्यात्, राजगृही सुजन्मभूः।
मुनिसुव्रतनाथस्य, दद्यान्मे सुव्रतं त्वसौ।।17।।

शौरीपुर्यर्द्धचक्र्याद्यैः, मान्या मे मंगलं क्रियात्।
इन्द्रादिभिः सदा वंद्या, नेमिनाथस्य जन्मभूः।।18।।

या कुण्डलपुरी पूज्या, मंगलं कुरुताद् भुवि।
जन्मभूमिः प्रसिद्धास्ति, महावीरस्य संप्रति।।19।।

राजधानीह सिद्धार्थ-भूपतेः साधुभिर्नुता।
नंद्यावर्तं च प्रासादं, रत्नवृष्ट्या सुमंगलम्।।20।।

चतुर्विंशतितीर्थेशां, षोडश जन्मभूमयः।
वंद्यास्ता मंगलं कुर्युः, घ्नन्तु जन्मपरम्परां।।21।।

दीक्षाज्ञानस्थलं पूज्यं, प्रयागश्चाहिच्छत्रकं।
संततं मंगलं कुर्यात्, पूर्णज्ञानर्द्धये भवेत् ।।22।।

कैलाशचंपापावोर्ज-यन्तसम्मेदशृंगिषु।
निर्वाणभूमयो यास्ताः, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।23।।

पंचकल्याणकैः पूज्या, भूमिसरोवराद्रयः।
तास्तान् ज्ञानमती याचे, दद्युः सिद्धिं च मे ध्रुवम्।।24।।

भगवान श्री अनंतनाथ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–करती हूँ तुम्हारी पूजा......

करते हैं प्रभू की आरति, आतमज्योति जलेगी।
प्रभुवर अनंत की भक्ती, सुख का स्रोत भरेगी।।
हे त्रिभुवन स्वामी, हे अन्तर्यामी।।टेक.।।

हे सिंहसेन के राजदुलारे, जयश्यामा प्यारे।
साकेतपुरी के नाथ, अनंत गुणाकर तुम न्यारे।।
तेरी भक्ती से हर प्राणी में शक्ति जगेगी,
प्रभुवर अनंत की भक्ती, सुख का स्रोत भरेगी।। हे.....।।1।।

वदि ज्येष्ठ द्वादशी में प्रभुवर, दीक्षा को धारा था,
चैत्री मावस में ज्ञानकल्याणक उत्सव प्यारा था।
प्रभु की दिव्यध्वनि दिव्यज्ञान आलोक भरेगी।।प्रभुवर ....।।2।।

सम्मेदशिखर की पावन पूज्य धरा भी धन्य हुई
जहाँ से प्रभु ने निर्वाण लहा, वह जग में पूज्य कही।
उस मुक्तिथान को प्रणमूँ, वांछित पूर्ण करेगी।।प्रभुवर ....।।3।।

सुनते हैं तेरी भक्ती से, संसार जलधि तिरते,
हम भी तेरी आरति करके, भव आरत को हरते।
''चंदनामती'' क्रम-क्रम से, इक दिन मुक्ति मिलेगी।। प्रभुवर......।।4।।

अयोध्या तीर्थ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–चांद मेरे आ जा रे ....

आरती तीर्थ अयोध्या की-2
तीर्थंकरों की, जन्मभूमि यह, सब मिल करो आरतिया।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।टेक.।।

शाश्वत यह पुरी अयोध्या, जग में जानी जाती है।
सम्मेदशिखर के सदृश, पावन मानी जाती है।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।1।।

यूं तो इस भू पर सारे, तीर्थंकर सदा जनमते।
लेकिन इस युग में जन्में, तीर्थंकर पंच परम थे।।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।2।।

श्री ऋषभ अजित अभिनंदन, सुमती अनंत जी जन्मे।
उन्नीस शेष तीर्थंकर, सब अलग-अलग ही जन्मे।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।3।।

तीरथ की पावन रज को, मस्तक पर धारण कर लो।
इसकी आरति कर अपने, कष्टों का निवारण कर लो।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।4।।

आदीश्वर की खड्गासन, प्रतिमा को नमन करें हम।
''चंदनामती'' इस शाश्वत, तीरथ को नमन करें हम।।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।5।।

श्री अनन्तनाथ भगवान के शासन देव की आरती

-ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

तर्ज-मैं तो भूल चली.............

माता वैरोटी की सब आज मिलकर आरति करें।
जिनशासन की....जिनशासन की हैं रक्षिका, सब मिल आरति करें।।टेक.।।

चौदहवें तीर्थंकर जग में कहाए,
उन अनन्त प्रभुवर को जो मन में ध्याए,
उसकी मनवांछा पूरो तुम मात मिलकर आरति करें।।माता..।।1।।

किन्नर यक्ष की प्रियकारिणी हो,
माता अतुल शक्ति की धारिणी हो।
तुम हो संकटनिवारक मात मिलकर आरति करें।माता..।।2।।
हो सम्यग्दृष्टी तेरी छवि है प्यारी,
हर आशा पूरो तव आरति उतारी।
'इन्दु' जिनभक्ति करूं दिन रात, मिलकर आरति करें।माता..।।3।।

श्री अनन्तनाथ भगवान की शासन देवी की आरती

-ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

तर्ज - चांद मेरे आ जा रे.............

करो सब मिलकर आरतिया-2
किन्नर यक्ष हैं, अनन्तप्रभु के, सम्यग्दृष्टि देवा, करो सब मिलकर आरतिया।।टेक.।।

जो अनन्तप्रभु को सच्चे मन से नित उर में लाते।
मनवांछित फल को पाकर, जीवन को सुखी बनाते।।करो सब....।।1।।

वैरोटी यक्षी के तुम, प्रियकारक देव कहाए।
भय रोग शोक दुखनाशक, संकट को दूर भगाएं।।करो सब....।।2।।

हैं धर्मप्रभावन तत्पर, मंगलमय सब सुखदाता,
जिनभक्तों के हैं रक्षक, धन सुख सम्पत्ति प्रदाता।।करो सब....।।3।।

हे किन्नर देव हमारी, बस इक अभिलाषा पूरो।
शिवधाम प्राप्ति तक 'इन्दू' जिनधर्म में तत्पर रखो।।करो सब.....।।4।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

सरयू के तट पर बन गया है,
जिनमंदिर निराला।
मंदिर निराला, अयोध्या में प्यारा............
सरयू के तट पर बन गया है,
जिनमंदिर निराला।।टेक.।।

जिनवर अनन्तनाथ का मंदिर,
जन्मस्थली जहाँ है टोंक सुन्दर।
भक्तों ने वहीं पे बनाया है,
जिनमंदिर निराला।।सरयू.।।1।।

मूंगा मणी सम प्रतिमा विराजीं,
मंद मंद वे हैं मुस्करातीं।
सबके हृदय को भाया है,
जिनमंदिर निराला।।सरयू.।।2।।

ऋषभदेव उद्यान निकट में,
जिन संस्कृति को कहता है जग में।
उपहार में जग ने पाया है,
जिनमंदिर निराला।।सरयू.।।3।।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी,
चन्दनामती ये प्रेरणादात्री।
तभी तीर्थ ने नया पाया है,
जिनमंदिर निराला।।सरयू.।।4।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–धीरे-धीरे बोल कोई सुन ना ले......

प्रभु अनन्तनाथ जन्मभूमि को नमूँ,
भूमि को नमूँ, जन्मभूमि को नमूँ।।
शुभ तीर्थ अयोध्या धाम है, जहाँ मंदिर बना महान है।।प्रभु अनन्त.।।टेक.।।

माता जयश्यामा को स्वप्न दिखे जहाँ,
सिंहसेन पितु दान किमिच्छक दें जहाँ।
धनकुबेर ने रत्नवृष्टि की थी जहाँ,
उत्सव करने इन्द्र स्वयं आये जहाँ।।
उस तीर्थ को, वन्दन करो-2,
शुभ तीर्थ अयोध्या धाम है, जहाँ मंदिर बना महान है।।प्रभु अनन्त.।।1।।

गणिनी माता ज्ञानमती की प्रेरणा,
पाकर तीरथ में आई नवचेतना।
धरती का यदि स्वर्ग तुम्हें है देखना,
इसकी छवि ''चंदनामती'' बस देखना।।
उस तीर्थ को, वंदन करो-2
शुभ तीर्थ अयोध्या धाम है, जहाँ मंदिर बना महान है।।प्रभु अनन्त.।।2।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज –माई रे माई..........

शाश्वत तीर्थ अयोध्या में फिर, गूँज उठी शहनाई।
कुछ ही वर्षों बाद जहाँ, खुशियों की बेला आई।।
शाश्वत जन्मभूमि की जय, जिनवर जन्मभूमि की जय.।।टेक.।।

तीर्थ अयोध्या पुण्यभूमि है, पाँच प्रभू जहाँ जनमे।
जयश्यामा अरु सिंहसेन जी, हर्षित हैं निज मन में।।

इन्द्रों की टोली स्वर्गों से, इसी धरा पर आई।
कुछ ही वर्षों बाद जहाँ, खुशियाँ की बेला आई।।
शाश्वत जन्मभूमि की जय, जिनवर जन्मभूमि की जय.।।1।।

गणिनी ज्ञानमती माता की, मिली प्रेरणा सबको।
जीर्णोद्धार विकास तीर्थ का, करो कराओ भक्तों।।
इसी भावना के कारण, उत्सव की घड़ियाँ आईं।
कुछ ही वर्षों बाद जहाँ, खुशियों की बेला आई।।
शाश्वत जन्मभूमि की जय, जिनवर जन्मभूमि की जय.।।2।।

तीर्थंकर प्रभु सर्व अरिष्ट, निवारक माने जाते।
भौतिक सम्पति पाने हेतू, भक्त शरण में आते।।
इसीलिए ''चंदनामती'', उन प्रभु की महिमा गाई।
कुछ ही वर्षों बाद जहाँ, खुशियों की बेला आई।।
शाश्वत जन्मभूमि की जय, जिनवर जन्मभूमि की जय.।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–मेरे अंगने में......

अनन्तनाथ प्रभु का जनम हुआ आज है।
अयोध्या में खुशियों का छाया साम्राज्य है।। टेक.।।
अयोध्या की धरती रतनमयी हो रही।
पन्द्रह महिने से यहाँ रत्नवृष्टि हो रही ।।
सारे नर नारी-2, करें जयकार हैं।। आदिनाथ......।।1।।
पूर्व दिशा सूरज को पाकर लाल हुई।
माता तीर्थंकर को पाके निहाल हुई।।
स्वर्गों में भी बाजे-2, बजे शंखनाद है।। आदिनाथ......।।2।।
नरकों में भी क्षण भर को शांति मानो छा गई।
सारी धरती 'चंदनामती' बधाई गा रही।
मानो आज सबको-2, मिला साम्राज्य है।। आदिनाथ......।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–दिल्ली का कुतुबमीनार देखो....

देखो देखो देखो, जन्मभूमि देखो,
अनन्तनाथ टोंक का विकास देखो, अयोध्यापुरी का प्रकाश देखो।
सारे जगत में इस तीर्थ का, फैला है नाम तुम आज देखो।।
हो देखो देखो, अयोध्या देखो-2 ।।टेक.।।

कहते हैं जिनशासन का, पहला शाश्वत तीर्थ यही।
तीर्थंकर भगवन्तों के, जन्म सदा होते हैं यहीं।।
उनकी ही महिमा का सार देखो, तीरथ अयोध्या विकास देखो।
सारे जगत में इस तीर्थ का, फैला है नाम तुम आज देखो।।
हो देखो देखो, अयोध्या देखो.।।1।।

वर्तमान चौबीसी के, पाँच तीर्थंकर जन्मे हैं।
उनके पाँचों टोंक यही, पुण्य कथानक कहते हैं।।
उन सबका होगा विकास देखो, जिनवर के गुण का प्रकाश देखो।
सारे जगत में इस तीर्थ का, फैला है नाम तुम आज देखो।।
हो देखो देखो, अयोध्या देखो.।।2।।

ज्ञानमती माताजी की, मिली प्रेरणा है सबको।
शाश्वत तीर्थ अयोध्या का, खूब प्रचार करो भक्तों।।
''चन्दनामती'' यह प्रयास देखो, जिनमत का होगा प्रकाश देखो।
सारे जगत में इस तीर्थ का, फैला है नाम तुम आज देखो।।
हो देखो देखो, अयोध्या देखो.।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-मेरी तो पतंग कट गई रे.............

प्रभु तीर्थनाथ का, श्री अनन्तनाथ का, मस्तकाभिषेक हो रहा है,
प्रभु का जयजयकार हो रहा है।।टेक.।।

आदितीर्थ अयोध्यापुरी में।
अनन्तनाथ जनम की नगरी में।।
उन प्रभु की है विशाल प्रतिमा।
तीर्थ अयोध्या की है जो गरिमा।।
उन्हीं तीर्थनाथ का, श्री अनन्तनाथ का, मस्तकाभिषेक हो रहा है,
प्रभु का जयजयकार हो रहा है।।1।।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माता।
अयोध्या पधारीं सुनो गाथा।।
मस्तकाभिषेक प्रथा डाली।
निधियाँ कई तीर्थ को दे डाली।।
उन्हीं तीर्थनाथ का, प्रभु आदिनाथ का, मस्तकाभिषेक हो रहा है,
प्रभु का जयजयकार हो रहा है।।2।।